23 नवम्बर, 2022

जयपुर

महानगर टाइम्स

मिशन पत्रकारिता

स्थानीय समाचार, राष्ट्रीय दृष्टिकोण

समरसता सेवा स्वाभिमान और संघर्ष के 25 वर्ष

25 सेवा-समर्पण के साल

।। न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितो यशः ।।

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि 'महानगर टाइम्स' ने अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर लिये हैं। संस्थान को रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस और संघर्ष की गाथाओं तथा राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है। आज मीडिया देश की विकास यात्रा का साक्षी और भागीदार दोनों है। स्वच्छ भारत और सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने जैसे अनेक जनभागीदारी के अभियानों को मीडिया द्वारा फैलाई गई जागरुकता से ताकत मिली है।

डिजिटल पेमेंट्स के जरिए लेन-देन में आज भारत दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो चुका है। इस बड़े बदलाव की दिशा में मीडिया द्वारा चलाए गए लोक शिक्षा के अभियानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कोविड महामारी के खिलाफ एकजुट भारत के प्रयासों को भी मीडिया ने मजबूती प्रदान की।

आजादी का अमृत कालखंड एक भव्य और विकसित भारत के निर्माण में अपने प्रयासों को गति प्रदान करने का अवसर है। मुझे विश्वास है 'महानगर टाइम्स' निष्पक्ष व जनोपयोगी समाचारों व विचारों के माध्यम से लोगों को जागरुक बनाने और नए भारत के निर्माण में उनके प्रयासों को सही दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

'महानगर टाइम्स' के पाठकों व संपादन और प्रकाशन टीम से जुड़े सभी लोगों को रजत जयंती वर्ष की बधाई व शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
कार्तिक 27, शक संवत् 1944
18 नवम्बर, 2022

23 नवंबर, 2022 को जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित रजत महोत्सव में (बाएं से) विशिष्ट अतिथि राजस्थान के शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्य अतिथि केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर, महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक गोपाल शर्मा और विशिष्ट अतिथि क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक भगवानसिंह रोलसाहबसर।

श्रीमद्जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती और उपस्थित गणमान्य नागरिक

रजत महोत्सव पर स्वर्णिम आशीर्वाद

महानगर टाइम्स ने पत्रकारिता के मानक मूल्य स्थापित किए: कलराज मिश्र

यह बहुत सुखद है कि आज एक ऐसे समाचार पत्र के रजत जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है, जो पत्रकारिता के आदर्श मूल्यों का निर्वहन करता रहा है। जिस तरह मिशन भावना से महानगर टाइम्स ने कार्य किया है, उसके बारे में अपने विचार रखने का सौभाग्य आज हमें प्राप्त हुआ है। इसके संस्थापक गोपाल शर्मा से मेरा बहुत पुराना संबंध है। मैं इनकी पत्रकारिता यात्रा का निरंतर साक्षी रहा हूं। मैं जानता हूं कि कैसे बहुत सारी चुनौतियों के बावजूद उन्होंने आज अपना यह मुकाम बनाया है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि पत्रकारिता के जो स्वस्थ मूल्य हैं- तथ्यपरक समाचार देना और पाठक को विचार संपन्न करना- इन दोनों का ही महानगर टाइम्स बहुत संजीदगी से पालना करता है। राष्ट्रीयता के विचारों से जुड़े महानगर टाइम्स को निरंतर पढ़ता हूं और यह भी पाता हूं कि इसमें सदा ही पाठकोपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है। मैं जब तक महानगर टाइम्स पढ़ नहीं लेता हूं, तब तक लगता है कि सही मायने में अखबार मैंने नहीं पढ़ा है। महानगर टाइम्स ने पत्रकारिता के मानक मूल्य स्थापित किए हैं, इसमें कोई शक नहीं है। मैं चाहता हूं कि समाचार के साथ विचारों के आलोक के लिए यह समाचार पत्र भविष्य में और अधिक सशक्त हो। गोपाल शर्मा को अपने मूल्यों पर कार्य करने के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

निर्भीकता, निष्पक्षता, निपुणता और प्रामाणिकता के प्रतीक: अनुराग ठाकुर

महानगर टाइम्स ने गोपाल शर्मा के नेतृत्व में 25 वर्ष की यात्रा के दौरान उल्लेखनीय कार्य किया है और उनकी उपलब्धियों का उत्सव मनाने के लिए आज हम सब यहां एकत्र हुए हैं। मैं तो यही कहूंगा कि निर्भीकता, निष्पक्षता, निपुणता के साथ-साथ प्रामाणिकता के दक्ष प्रतीक के रूप में गोपाल शर्मा ने जो कर दिखाया है, वह पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत कम लोगों ने किया है। जिस तरह उन्होंने महानगर टाइम्स शुरू करने की योजना बनाई और कुछ लोगों ने कहा कि यह शुरू होने से पहले ही बंद हो जाएगा... ऐसे अवसर हम सभी के जीवन में आते हैं; उस दौरान परिस्थितियों से भागना नहीं बल्कि लड़ना होता है। गोपाल शर्मा ने वह लड़ाई लड़ी और पत्रकारिता के माध्यम से सच्ची खबरों को सही समय पर जनता तक पहुंचाने का काम किया। 2001 में जब गुजरात में भूकंप आया, उस समय तो महानगर टाइम्स को शुरू हुए मात्र चार वर्ष हुए थे; इसके बावजूद वहां 50 लाख रुपए की मदद पहुंचाने का काम किया। इसी तरह वयोवृद्ध पत्रकारों का सम्मान किया गया, जिनमें कोई 93 वर्ष के हैं तो कोई 91 वर्ष के हैं। इस तरह की पहल के लिए मैं गोपाल शर्मा और महानगर टाइम्स को बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देता हूं।

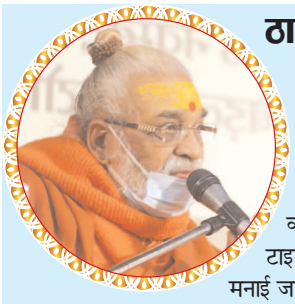

ठाठ-बाट से मने स्वर्ण जयंती: वासुदेवानंद सरस्वती

महानगर टाइम्स के रजत महोत्सव पर मंगलकामनाएं! गोपाल शर्मा और उनके समाचार पत्र को प्रभु और यश प्रदान करें। आज से 25 साल बाद महानगर टाइम्स की स्वर्ण जयंती और भी ठाठ-बाट से मनाई जाए। महानगर टाइम्स की स्थापना के समय से ही मैं जुड़ा रहा हूं। इस समाचार पत्र ने अपने गौरवशाली 25 वर्षों में लगातार प्रगति की है। जो लोग गुरु और माता-पिता का सम्मान करते हैं, उन्हें आयु, विद्या, यश, बल और धन की प्राप्ति होती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गोपाल शर्मा हैं। उन्होंने अपने गुरु और पिता को आदर्श मानकर यह प्रकाशन शुरू किया और आज उनकी श्रद्धा और विश्वास का फल महानगर टाइम्स के रूप में सबके सामने है।

लंबे संघर्ष के बाद मिली सफलता : डॉ. जोशी

महानगर टाइम्स को लंबे संघर्ष के बाद सफलता मिली है। समाचार पत्र को 25 साल पूरे हो गए हैं और इसकी नींव मजबूत है। अब इस नींव पर भव्य इमारत का निर्माण होगा, यानी यह आगे और तरक्की करेगा। आशा है कि महानगर टाइम्स अपने मिशन पत्रकारिता के उद्देश्यों को पूरा करते हुए लोकतंत्र और संसदीय व्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आज सोशल मीडिया पत्रकारिता के साथ संसदीय व्यवस्था और लोकतंत्र के समक्ष बड़ा खतरा बन रहा है। सोशल मीडिया पर कई बार गलत खबरें चल रही होती हैं, जो सत्य नहीं हैं या उनका उद्देश्य किसी एक पक्ष को फायदा पहुंचाना होता है। इसलिए आज भी प्रिंट मीडिया को ही विश्वसनीय माना जाता है।

महानगर टाइम्स की पहल ऐतिहासिक : डॉ. कल्ला

गोपाल शर्मा के नेतृत्व में महानगर टाइम्स ने पत्रकारिता के माध्यम से संस्कृति और सामाजिक सरोकार को आगे बढ़ाने का काम किया है। समाचारों के माध्यम से इस अखबार ने कई बार पीड़ितों की बात सरकार तक पहुंचाई और न्याय दिलवाने में मदद की। आज पत्रकारिता का दायरा बढ़ गया है। ऐसे में खबरों के चयन और उनकी भाषा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। पत्रकारिता के मूल्यों के प्रति श्रद्धा महानगर टाइम्स की पहचान है। इससे पूर्व महानगर टाइम्स द्वारा राजस्थान के वरिष्ठतम पत्रकारों का सम्मान किया गया था और उन सभी को 1-1 लाख रुपए की सम्मान निधि प्रदान की गई थी। यह वास्तव में एक ऐतिहासिक पहल थी।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् की भावना पर कायम : डॉ. पूनियां

आज का दिन महानगर टाइम्स के साथ मेरे लिए भी गौरव का दिन है। 25 साल पहले 23 नवंबर, 1997 को जब महानगर टाइम्स का लोकार्पण हुआ था, तब मैं भाजपा के सामान्य कार्यकर्ता के रूप में इसी बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में शामिल हुआ था। 25 साल बाद आज फिर उसी समाचार-पत्र के रजत महोत्सव में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होना, महानगर की विकास यात्रा को देखना सुखद है। वर्तमान दौर में प्रिंट मीडिया के सामने कई प्रकार की चुनौतियों और बाधाओं के बावजूद महानगर टाइम्स ने अपनी साख और निष्पक्षता में कोई कमी नहीं आने दी। अखबार 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की भावना पर कायम है।

अखबार निकालना चुनौती भरा कार्य : रोलसाहबसर

महानगर टाइम्स के 25 साल पूरे होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामना। गोपाल शर्मा ने चुनौतियों के बावजूद अखबार का नियमित रूप से सफलतापूर्वक प्रकाशन किया और 25 वर्षों का शानदार सफर तय करते हुए कीर्तिमान कायम किए। अखबार निकालना साधारण कार्य नहीं है, यह एक चुनौतियों से भरा हुआ रास्ता है। लेकिन कई ऐसे उदाहरण भी दिखते हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि सत्य और सार्थकता को उद्देश्य बनाकर अगर पत्रकारिता को मिशन के रूप में जिया जाए तो ईश्वर भी साथ देता है और हर संकट दूर होता है। गोपाल शर्मा ने इसी सोच के साथ महानगर टाइम्स का प्रकाशन शुरू किया और वे इसमें सफल रहे।

पाठकों का विश्वास सबसे बड़ी ताकत: गोपाल शर्मा

महानगर टाइम्स की शुरुआत सच्चाई, स्वाभिमान, सेवा और समर्पण के संकल्प के साथ हुई थी। महानगर का मंत्र था, 'झुकना नहीं, बिकना नहीं और न्याय की आस लेकर आने वाले पीड़ित को निराश नहीं लौटने देना।' इसी सोच पर अडिग रहते हुए महानगर टाइम्स काम करता रहा। विश्वास से हकीकत तक की यह यात्रा छोटी काशी जयपुर के आराध्य गोविंद देवजी के आशीर्वाद और पाठकों के विश्वास से संभव हुई है। मेरे पिता पं. रामेश्वरलाल शर्मा, पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत और वरिष्ठ पत्रकार कर्पूरचंद कुलिश प्रेरणास्रोत रहे हैं। महानगर टाइम्स की 25 वर्ष की यात्रा के दौरान आई चुनौतियों से लड़ने की ताकत इनके आशीर्वाद से मिली।

पद्मश्री अनवर खां मांगणियार और उनके पौत्र मोती खां तथा सहयोगी फकीरा खां, रोशन खां, शौकत खां, मंजूर खां, जैसा खां आदि ने राजस्थानी लोकगीतों की प्रस्तुति दी।

समारोह स्थल के बाहर पारंपरिक लोक संगीत-नृत्य से हो रहे स्वागत ने आगंतुकों को आनंदित किया।

25 वर्षों की विकास यात्रा पर प्रदर्शनी का उद्घाटन करते डॉ. सतीश पूनियां

मुख्य अतिथि अनुराग ठाकुर का मंच पर भावपूर्ण स्वागत-अभिनंदन

समारोह में आए गणमान्य अतिथियों के बीच जाकर आत्मीय मुलाकात करते महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक गोपाल शर्मा।

राजस्थान के क्षेत्रीय संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल

जयपुर नगर निगम (हेरिटेज) की महापौर मुनेश गुर्जर

राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी

वरिष्ठ पत्रकार प्रवीणचंद्र छाबड़ा और राजेन्द्र बोड़ा

रेवासा धाम अग्रपीठाधीश्वर राघवाचार्य जी

केजीके ग्रुप के डायरेक्टर नवरतन कोठारी और भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल की वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनिला कोठारी

समरसता, शौर्य और सेवा के प्रतीक तीन व्यक्तित्वों को गणमान्य अतिथियों के हाथों सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाले विशिष्ट जनों को स्मृति चिह्न के साथ एक-एक लाख रुपए की सम्मान राशि दी गई।

कन्हैयालाल साहू (मरणोपरांत)

उदयपुर निवासी कन्हैयालाल साहू ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण कट्टरपंथियों के निशाने पर आकर प्राण न्योछावर कर दिए।

राष्ट्रीय समरसता सम्मान

(यह सम्मान उनकी पत्नी जशोदा देवी और पुत्र यश ने ग्रहण किया)

नेत्रेश शर्मा

करौली में हिंसा और आग की लपटों के बीच पुलिस कांस्टेबल नेत्रेश शर्मा ने जान का जोखिम उठाकर महिलाओं और मासूम को सुरक्षित बाहर निकाला।

राष्ट्रीय शौर्य सम्मान

विमला देवी

सेवा भारती बाल विद्यालय के माध्यम से विमला देवी ने जयपुर के गरीबी-कुपोषण से पीड़ित हजारों बच्चों को शिक्षित-संस्कारित और कार्यकुशल बनाया।

राष्ट्रीय सेवा सम्मान

पैरा ओलंपिक में दो स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचने वाले पद्मभूषण देवेन्द्र झाझड़िया का गणमान्य अतिथियों ने सम्मान किया।

राजस्थानी कालबेलिया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलवाने वाली पद्मश्री गुलाबो सपेरा को सम्मानित करते अतिथिगण।

मिनिएचर पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध कलाकार पद्मश्री एस. शाकिर अली को समारोह में विशिष्ट अलंकरण प्रदान किया गया।

अपनी गायकी के जरिए धोरां री धरती का सांस्कृतिक संदेश विश्व तक पहुंचाने वाले पद्मश्री अनवर खां मांगणियार का अभिनंदन।

राज्यपाल कलराज मिश्र और केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर को स्मृति चिह्न भेंट करते महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक गोपाल शर्मा, कार्यकारी संपादक जिज्ञासु शर्मा और प्रबंध संपादक ऐश्वर्य शर्मा।

जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती जी का सम्मान।

धन्यवाद ज्ञापित करते जिज्ञासु शर्मा

डॉ. सी.पी. जोशी को व्यवसायी सुभाष सिंगी ने स्मृति चिह्न भेंट किया।

महानगर टाइम्स की ओर से डॉ. सतीश पूनियां को समाजसेवी रवि नैय्यर ने, डॉ. बी.डी. कल्ला को शिक्षाविद जयसिंह भगासरा ने और भगवान सिंह रोलसाहबसर को महानगर टाइम्स के समाचार संपादक विनोद चतुर्वेदी ने स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया।

मूल्य : 2 रुपए पृष्ठ : 12 वर्ष: 26 अंक :1

जयपुर
महानगर टाइम्स
25 सेवा-समर्पण के साल
मिशन पत्रकारिता का प्रहरी
रजत महोत्सव

www.mahanagartimes.com
जयपुर, बुधवार 23 नवम्बर, 2022
जयपुर, कोटा, दौसा, अलवर, उदयपुर एवं जोधपुर से एक साथ प्रकाशित

महानगर ने पूरा किया चौथाई सदी का सफर, बिड़ला ऑडिटोरियम में रजत महोत्सव आज

सेवा-समर्पण-संघर्ष के 25 वर्ष

मिशन पत्रकारिता

महानगर टाइम्स के रजत महोत्सव पर हृदय के अन्तर्तल से कोटिशः नमन.. अभिनंदन!! यह अवसर उस यात्रा का एक सुखद मोड़ है, जो 25 साल पहले आम जनता के सजग प्रहरी की भूमिका से प्रारंभ हुई। पीत पत्रकारिता, आडम्बर और अहंकार से दूर मिशन पत्रकारिता का स्वप्न ही महानगर का आराध्य था; कांटों भरे राह का सफर उसकी नियति थी। इस दौरान आए संकटों और बाधाओं ने संकल्प को और दृढ़ किया; सच्चाई की राह कभी छोड़ी नहीं गई। लगभग चौथाई सदी का सुदीर्घ सफर पूरा करने के बाद हम अपने को ऐसे समय और समाज के बीच पाते हैं जिसमें मनुष्य की आवश्यकताओं ने उसे जकड़ लिया है, विकास की रफ्तार में मूल्य प्रभावित हुए हैं; सरकार की परोक्ष भूमिका बढ़ती जा रही है और आम जन अपने अस्तित्व को बनाए और बचाए रखने के लिए संघर्षरत है। जाने-अनजाने संकटों के बीच अस्तित्व की बड़ी लड़ाई लड़ी जा रही है। इन हालात ने मीडिया खासकर समाचार पत्रों की भूमिका को फिर से परिभाषित करने को विवश कर दिया है। मीडिया विरुदावलियों के पर्याय, पूर्वाग्रह ग्रस्त, अस्तित्व रक्षा या टुकुर-टुकुर ताकने के विकल्प में उलझ गया है।

महानगर टाइम्स ने कभी ठकुरसुहाती भूमिका को नहीं अपनाया; सत्ता का मुखापेक्षी नहीं रहा; सत्य पर आवरण डालने का काम नहीं किया; पीत पत्रकारिता के रास्ते पर नहीं चला; राजनीतिक दलों की गुटबाजी का माध्यम नहीं बना और न साफ-सुथरे चेहरों पर कीचड़ उछालने का काम किया है। विभिन्न सरकारों के समय विभिन्न प्रकार के सहयोग-असहयोग के बावजूद कभी चरणवंदना, क्षमा या कृपण भाव में नहीं उलझा। हमारे लिए पत्रकारिता आज भी मिशन है और आम जन के दुःख-दर्द में भागीदारी और कष्ट निवारण में सहयोग ही हमारे निहितार्थ हैं। अखबार गरीब के आंसू और पीड़ित का दर्द मिटा सके, यही सार्थकता हमें स्वीकार्य है।

हमारा सपना एक ऐसे संगठित और विकसित राष्ट्र-राज्य में गिलहरी की भूमिका निभाना है, जिसमें जनता का स्वाभिमान सुरक्षित हो, उसके पास विकास के भरपूर अवसर हों, प्रतिभा का सम्मान हो और सुरक्षित समाज हो। यह खुशी की बात है कि पिछले 25 सालों से राजस्थान का नेतृत्व कर रहे राजनेताओं ने महानगर टाइम्स की भूमिका को समान भाव से सराहा है.. पाठकों, विज्ञापनदाताओं और सहयोगियों ने भी उसकी साख को समझने का प्रयत्न किया है। यह विश्वसनीयता ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। पाठकों का आशीर्वाद हमारा संबल है और एक सेवक की भूमिका ही हमें वरेण्य है।

इस अवसर पर मैं विशेष रूप से महानगर परिवार के उन सदस्यों को याद कर रहा हूं, जिन्होंने बहुत कुर्बानियां दी हैं। कोरोना के क्रूर काल में हमने अपने साथियों को खोया है। उनका कर्मठ स्वरूप और मुस्कुराता हुआ चेहरा सदैव हमारी स्मृतियों में रहेगा।

आभार.. अभिनंदन..
अनंत शुभकामनाओं सहित।

- गोपाल शर्मा

कर्तव्य पथ पर डटा रहेगा महानगर: मोदी

महानगर टाइम्स के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्वास प्रकट किया है कि महानगर टाइम्स निष्पक्ष और जनोपयोगी समाचारों तथा विचारों के माध्यम से लोगों को जागरूक बनाने और नए भारत के निर्माण के प्रयासों को सही दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा। अपने शुभकामना संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस और संघर्ष की गाथाओं तथा राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है।

उन्होंने जनभागीदारी के अभियानों की सफलता के लिए मीडिया द्वारा फैलाई गई जागरूकता को महत्वपूर्ण माना। मीडिया को देश की विकास यात्रा का साक्षी और भागीदार बताते हुए उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया जैसे महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के कारण आए बड़े बदलावों की दिशा में मीडिया द्वारा चलाए गए लोक शिक्षा के अभियानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कोविड महामारी के खिलाफ एकजुट भारत के प्रयासों को भी मीडिया ने मजबूती प्रदान की। प्रधानमंत्री ने महानगर टाइम्स के पाठकों और पूरी टीम को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। इससे पूर्व रजत जयंती वर्ष की शुरुआत पर उन्होंने समाज को निरंतर जागरूक करने में महानगर टाइम्स की यात्रा को सराहनीय बताया था। उन्होंने कहा था, 'यह देखना सुखद है कि महानगर टाइम्स पत्रकारिता की श्रेष्ठ परंपरा को आगे ले जाने का कार्य कर रहा है।'

प्रधान मंत्री
Prime Minister
संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि 'महानगर टाइम्स' ने अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर लिये हैं। संस्थान को रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस और संघर्ष की गाथाओं तथा राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है। आज मीडिया देश की विकास यात्रा का साक्षी और भागीदार दोनों है। स्वच्छ भारत और सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने जैसे अनेक जनभागीदारी के अभियानों को मीडिया द्वारा फैलाई गई जागरूकता से ताकत मिली है।

डिजिटल पेमेंट्स के जरिए लेन-देन में आज भारत दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो चुका है। इस बड़े बदलाव की दिशा में मीडिया द्वारा चलाए गए लोक शिक्षा के अभियानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कोविड महामारी के खिलाफ एकजुट भारत के प्रयासों को भी मीडिया ने मजबूती प्रदान की।

आजादी का अमृत कालखंड एक भव्य और विकसित भारत के निर्माण में अपने प्रयासों को गति प्रदान करने का अवसर है। मुझे विश्वास है 'महानगर टाइम्स' निष्पक्ष व जनोपयोगी समाचारों व विचारों के माध्यम से लोगों को जागरूक बनाने और नए भारत के निर्माण में उनके प्रयासों को सही दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

'महानगर टाइम्स' के पाठकों व संपादन और प्रकाशन टीम से जुड़े सभी लोगों को रजत जयंती वर्ष की बधाई व शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
कार्तिक 27, शक संवत् 1944
18 नवम्बर, 2022

मिशन पत्रकारिता के 25 साल

रजत महोत्सव पर ऐतिहासिक सम्मान समारोह

राज्यपाल कलराज मिश्र का मिलेगा सान्निध्य, अनुराग ठाकुर मुख्य अतिथि, सी.पी. जोशी अध्यक्ष; रोलसाहबसर, कल्ला और पूनियां विशिष्ट अतिथि

महानगर संवाददाता

जयपुर। महानगर टाइम्स के 25 वर्ष पूरे होने पर बुधवार को बिड़ला ऑडिटोरियम में ऐतिहासिक रजत महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। राज्यपाल कलराज मिश्र के सान्निध्य में होने वाले इस समारोह में केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर मुख्य अतिथि होंगे। वहीं विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी समारोह की अध्यक्षता करेंगे। शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां और श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक भगवान सिंह रोलसाहबसर विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। महानगर टाइम्स की 25 वर्ष की विकास यात्रा पर प्रदर्शनी और पद्मश्री अनवर खां मांगणियार की सांस्कृतिक प्रस्तुति समारोह का मुख्य आकर्षण होगी।

महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक गोपाल शर्मा ने इस अवसर को महानगर टाइम्स की सुदीर्घ यात्रा का सुखद पड़ाव बताते हुए पाठकों का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि पाठक समाचार-पत्र की आत्मा हैं। उनके समर्थन और सहयोग के कारण ही महानगर टाइम्स आज इस मुकाम पर पहुंच सका है। शर्मा ने कहा कि सांध्यकालीन टैबलायड के रूप में करीब डेढ़ दशक की अवधि के दौरान आम आदमी की प्रखर आवाज के रूप में स्थापित होकर महानगर का प्रातःकालीन स्वरूप सामने आया; इस यात्रा के दौरान तमाम चुनौतियों और बाधाओं के बावजूद जनता का आशीर्वाद ही महानगर का संबल बना रहा। भाव, भावना, सेवा, श्रद्धा और समर्पण इस समाचार पत्र के वैचारिक स्तंभ हैं। मिशन पत्रकारिता के प्रहरी की भूमिका ही हमें वरेण्य है और इसी भावना के साथ महानगर टाइम्स पत्रकारिता धर्म का निर्वाह करता रहेगा।

रजत महोत्सव में गणमान्य अतिथियों के हाथों विभिन्न क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तित्वों का सम्मान किया जाएगा। इस अवसर पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण कट्टरपंथियों का निशाना बने कन्हैयालाल साहू को मरणोपरांत 'राष्ट्रीय समरसता सम्मान', करौली में हिंसा और आग की लपटों के बीच अपनी जान जोखिम में डालकर महिलाओं और मासूम को सुरक्षित बचाने वाले पुलिसकर्मी नेत्रेश शर्मा को 'राष्ट्रीय शौर्य सम्मान' और आर्थिक-सामाजिक पिछड़ेपन तथा कुपोषण से पीड़ित हजारों बच्चों को शिक्षित और संस्कारशील बनाने में अपना अप्रतिम योगदान देने वाली विमला कुमावत को 'राष्ट्रीय सेवा सम्मान' प्रदान किया जाएगा। इन सभी को एक-एक लाख रुपए की सम्मान निधि भी भेंट की जाएगी।

राष्ट्रीय समरसता सम्मान
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण कट्टरपंथियों के निशाने पर आकर प्राण न्योछावर करने वाले

कन्हैयालाल साहू

राष्ट्रीय शौर्य सम्मान
हिंसा और आग की लपटों के बीच जान को जोखिम में डालकर महिलाओं और मासूम को सुरक्षित बचाने वाले

नेत्रेश शर्मा

राष्ट्रीय सेवा सम्मान
आर्थिक-सामाजिक पिछड़ेपन और कुपोषण से पीड़ित हजारों बच्चों को शिक्षित, संस्कारित और कार्यकुशल बनाने वाली

विमला कुमावत

राजस्थान के पद्म विजेताओं को विशिष्ट अलंकरण

पैरा ओलम्पिक में दो स्वर्ण पदक जीतकर रिकॉर्ड कायम करने वाले पद्मभूषण देवेन्द्र झाझड़िया, राजस्थान के कालबेलिया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय पटल पर चर्चित करने वाली पद्मश्री गुलाबो सपेरा, मिनिएचर पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध पद्मश्री एस. शाकिर अली और लोक गायन के माध्यम से राजस्थान की संस्कृति का संदेश विश्व तक लेकर गए पद्मश्री अनवर खां मांगणियार को विशिष्ट अलंकरण से सम्मानित किया जाएगा।

जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती के होंगे आशीर्वचन

रजत महोत्सव में वरिष्ठतम जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती जी की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। वे कार्यक्रम में पधारे सभी गणमान्य नागरिकों को अपना आशीर्वचन प्रदान करेंगे।

समय के सफर का सच

महानगर टाइम्स के 25 वर्षों के रोमांचक सफर का ब्यौरा देते हुए संस्थापक संपादक *गोपाल शर्मा* ने मीडिया के बदलते स्वरूप और भविष्य के रोडमैप को लेकर महानगर टीम से विस्तृत चर्चा की। कुछ साथियों के पास जिज्ञासा भरे सवाल थे; उनका जवाब भी दिया। इस बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं:

विनोद चतुर्वेदी : रिपोर्टर के रूप में लगभग डेढ़ दशक की सक्रियता के दौरान आपने राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। आपने युग परिवर्तनकारी घटनाओं का विस्तृत कवरेज किया, अनेक सनसनीखेज खुलासे किए, कई गंभीर विषयों की ओर आमजन और सरकारों का ध्यान आकृष्ट करवाया। कॅरियर की दृष्टि से भी आप सफलता की ऊंचाइयों को छू रहे थे। ऐसी स्थिति में स्वतंत्र पत्रकारिता की ओर बढ़ने और नया अखबार चालू करने के पीछे क्या उद्देश्य रहा?

इसको संयोग भी कह सकते हैं या कोई प्रेरणा भी मान सकते हैं कि अपना अखबार शुरू करने का विचार मेरी पदोन्नति के साथ प्रबल हुआ। हर साल जुलाई में 'राजस्थान पत्रिका' में वेतन वृद्धि और पदोन्नति की घोषणा होती थी। जुलाई के प्रथम सप्ताह में मुझे मुख्य संवाददाता के रूप में पदोन्नत किया गया। उसी दौरान मेरे मन में यह विचार आया कि अब कोई नया काम करना चाहिए। मैं पत्रिका संवाददाता के रूप में पूरे देश में कई महत्वपूर्ण घटनाओं को कवर कर चुका था। आतंकवादियों की चुनौती के बीच लाल चौक पर तिरंगा फहराया जाना, रामजन्मभूमि आंदोलन के सभी महत्वपूर्ण पड़ाव, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित दिवराला सती प्रकरण... इन सभी घटनाओं के दौरान मैं राजस्थान में मीडिया के पर्याय बने समाचार पत्र के प्रतिनिधि की भूमिका में रहा। इन ऐतिहासिक विषयों की रिपोर्टिंग का अवसर मिलना निश्चित रूप से बड़ी बात है। लेकिन किसी गरीब के साथ अन्याय होना या पुलिस हिरासत में किसी निर्दोष व्यक्ति को मार दिया जाना भी मेरे लिए उतने ही महत्वपूर्ण विषय थे। कारसेवकों पर हो रही गोलीबारी के बीच खड़े होकर रिपोर्टिंग करने की बात हो या किसी साधारण ग्रामीण परिवार को न्याय दिलवाने के लिए जोखिम उठाना हो... मेरे लिए दोनों बातें कर्तव्य से जुड़ी थीं और कर्तव्य के निर्वहन से समान संतोष प्राप्त होता था। ऐसी भी घटनाएं हुईं कि किसी वैद्य को पत्रकारिता के जरिए न्याय दिलवाने का विषय उठाया और उसकी हत्या कर दी गई। इन सब बातों के बीच यह विचार दृढ़ होता गया कि अपने जीवन को किसी काम के लिए लगाना है। पत्रकारिता के अलावा कुछ और आता नहीं था, इसलिए रास्ता तो वही रहना था; सिर्फ प्लेटफॉर्म बदल गया। इसका एक कारण तो यह विचार बना कि जिन लोगों को आदर्श के रूप में देख रहा था, उनकी पीढ़ी जा रही थी। पत्रिका संस्थापक कर्पूरचंद कुलिश की कम होती सक्रियता के साथ यह महसूस हुआ कि उनके जैसा नेतृत्व मिल नहीं पाएगा। दूसरी

15 अगस्त, 2022... आजादी के अमृत महोत्सव पर्व पर जयपुर में आयोजित ऐतिहासिक 'स्वराज 75' समारोह में राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व केंद्रीय मंत्री राज्यवर्धन राठौड़, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल, सर्जिकल स्ट्राइक के नायक ग्रुप कैप्टन अभिनंदन वर्धमान और सीडीएस जनरल बिपिन रावत की पुत्री कृतिका रावत के साथ संयोजक की भूमिका में गोपाल शर्मा

चीज थी कि भैरोंसिंह शेखावत की राजनीति को नजदीक से देखने का अवसर मिला और विधानसभा में उनके द्वारा तथ्यों-सबूतों के साथ निरुत्तर कर दिए जाने वाले विषय उठाए जाने की शैली का गहरा प्रभाव पड़ा। पत्रिका में प्रकाशित मेरी किसी भी खबर का खंडन नहीं होने का यह एक बड़ा कारण रहा था। ऐसे में यह सोच विकसित हुई कि कुलिश की साहसिक सोच और शेखावत की मुद्दे उठाने की शैली को मिलाकर एक नया प्रयोग किया जाए। यह काम अपना प्लेटफॉर्म विकसित किए बिना नहीं हो सकता था। यही प्लेटफॉर्म बना महानगर टाइम्स।

दीपेन्द्र सिंह ईसरदा : अखबार की रूपरेखा बनाने और उसे मूर्त रूप देने के बीच का सफर कैसा रहा और इस दौरान किस तरह की चुनौतियां सामने आईं ?

अपना अखबार शुरू करने की सोच के पीछे कोई बड़ा आश्वासन नहीं था। एक जोधपुर से जुड़े हुए व्यक्ति कुछ समय से संपर्क में थे। वे सोचते थे कि पैसा लगा दिया जाए, किसी एक अन्य व्यक्ति को साथ जोड़ लिया जाए और फिर हम तीनों मिलकर अखबार निकालें। जोधपुर वाले सज्जन का पत्रकारिता से कोई संबंध नहीं था, लेकिन अखबार चलाने में उनकी रुचि थी। एक अन्य मित्र ने यह सहारा दे दिया कि लालकोठी में उनकी 50 गज में बनी हुई बिल्डिंग का इस्तेमाल कार्यालय के रूप में दो-तीन वर्ष तक नि:शुल्क किया जा सकता है। इन दो बातों से आधार तैयार हुआ। हालांकि, जब अखबार शुरू होने का मौका आया तो संयोग से धन लगाने की बात कर रहे सज्जन किसी परेशानी में पड़ गए। ऐसे में, जो लोग इस विषय से परिचित थे, उनका सुझाव था कि अखबार निकालने का विचार छोड़ देना चाहिए। लेकिन मेरे मन में यह भाव आया कि अगर कदम आगे बढ़ा चुके हैं तो पीछे नहीं हटना चाहिए। आर्थिक संसाधन बिलकुल नहीं थे। सबसे पहले एक ऐसी दरी खरीदकर लाई गई, जिस पर लोग बैठ सकें। फिर एक टेबल बनवाई गई, जिसके चारों तरफ कुर्सियां लगा दी जाएं तो पत्रकार कुछ आराम से बैठ सकें। कुछ कंप्यूटरों के लिए भी बात की गई, लेकिन धन की बाधा बनी हुई थी। विचित्र ही है कि सपना अखबार निकालने का था और कागज तक के लिए पैसे नहीं थे। कुछ लोग थे, जिन्होंने मेरा सफर देखा हुआ था, जिन्हें विश्वास था कि यह अखबार एक ईमानदार और निष्ठापूर्ण प्रयास है; लेकिन वे लोग भी कोई बड़े पूंजीपति नहीं थे। उन्होंने थोड़ा आर्थिक निवेश किया। एक बड़ी चुनौती यह भी थी कि दो स्थापित अखबारों के रहते तीसरा अखबार निकालने के लिए जिस तरह की योग्य टीम चाहिए, वह कैसे बनाई जाए। जयपुर में जो लोग अच्छा काम करने वाले थे, वे या तो राजस्थान पत्रिका में लगे हुए थे या दैनिक भास्कर से जुड़े थे। मैं इसे संयोग ही कहूंगा कि दोनों संस्थानों से मिलाकर लगभग 20 पत्रकार और अन्य संबंधित विभागों के लोग हमारे साथ जुड़ गए। वे अच्छा वेतन और स्थाई नौकरी छोड़कर एक ऐसे प्रयोग

में शामिल हो गए, जिसका भविष्य अनिश्चित था। श्री राजेश माथुर वर्षों तक पत्रिका में संपादकीय डेस्क संभाले हुए थे; वे कहते ही महानगर टाइम्स में आ गए। महानगर टाइम्स के आगे बढ़ने में जनसमर्थन का सबसे बड़ा योगदान रहा। उस दौरान ऐसे भी शक्तियां थीं, जिनको यह रास नहीं आया कि एक अखबार शुरू हो और वह इस तरह से जनता में फैले। महानगर टाइम्स को बंद करवाने के लिए किराए के गुंडों तक का इस्तेमाल किया गया। उन हालात में जयपुर के जागरूक नौजवानों ने हमेशा साथ दिया; वे शाम को जीपों में बैठकर निकलते और सुनिश्चित करते कि अखबार के वितरण में कोई व्यवधान नहीं आए। महानगर टाइम्स के प्रति सहयोग की भावना को इस बात से समझा जा सकता है कि लोकार्पण समारोह में महानगर टाइम्स के बंडल उठाकर आने वाले नौजवान इस समय मंत्री पद पर बने हुए हैं। यह उनका प्रेम था... विश्वास था। जो लोग मेरी 12 वर्षों की पत्रकारिता के साक्षी रहे थे, उन्होंने लगातार साथ दिया। विज्ञापन का विषय हो या अन्य किसी प्रकार के सहयोग का विषय हो... जब भी किसी की तरफ हाथ बढ़ाने की कोशिश की गई तो उन्होंने आगे बढ़कर हाथ थामा। महानगर टाइम्स ने भी उस विश्वास को बनाए रखा। हमेशा विज्ञापन के बजाए खबरों को ही महत्व दिया गया। पत्रकार साथियों ने जी-जान लगाकर समाचार एकत्र किए... न समय देखा, न मौसम की परवाह की और न ही किसी के दबाव या धमकी से प्रभावित हुए। यही कारण रहा कि महानगर टाइम्स सच्ची, निष्पक्ष और जिम्मेदार पत्रकारिता का प्रतीक बन गया। रास्ते में चाहे जितनी रुकावटें आई हों, लेकिन जनता के विश्वास की कसौटी पर खरा उतरने का संतोष हमें कर्तव्य पथ पर डटे रहने की प्रेरणा देता रहा।

मोहनलाल शर्मा : आपने इतना संघर्ष करते हुए अखबार शुरू किया। महानगर टाइम्स अपने शुरुआती दौर में था, जब देश में दो बड़ी घटनाएं हुईं- कारगिल युद्ध और गुजरात भूकंप। इन दोनों अवसरों पर महानगर टाइम्स ने एक समाचार पत्र से बढ़कर भूमिका निभाई। कारगिल युद्ध में प्राण न्योछावर करने वाले राजस्थान के सभी 71 शहीदों के परिजनों को जयपुर में एक मंच पर लाकर उनका सम्मान किया गया। इसी तरह, गुजरात भूकंप पीड़ितों को तत्काल जरूरत की चीजें मुहैया करवाने के लिए महानगर टाइम्स ने जो पहल की, वह इतिहास में दर्ज हो गई है। इन कामों के लिए जो संगठन शक्ति चाहिए और जितनी आर्थिक ताकत चाहिए, वह सोचना ही उस दौर में कठिन था। आप में वह संकल्प लेने की शक्ति कहां से आई ?

कारगिल युद्ध के समय राजस्थान में दो प्रमुख समाचार पत्रों द्वारा धनराशि एकत्र की जा रही थी, जो बाद में सरकार को सहयोग के रूप में भेंट की गई। उस दौरान जयपुर के दो बड़े व्यवसायी वेदभूषण सेठी और सुरेश अग्रवाल महानगर टाइम्स कार्यालय आए। उन्होंने सुझाव दिया कि महानगर टाइम्स को भूमिका निभानी चाहिए। मैंने कहा कि अपने अखबार की ऐसी स्थिति नहीं है। लेकिन उन दोनों ने प्रयास किए और जल्दी ही ऐसी स्थिति बनी कि तत्कालीन राज्यपाल अंशुमान सिंह, जयपुर के पूर्व महाराजा ब्रिगेडियर भवानी सिंह, सैनिक कल्याण मंत्री डॉ. चंद्रभान और समाजसेवी रवि नैयर जैसे प्रमुख लोगों के नेतृत्व में जनता एकजुट हो गई। जयपुर के प्रत्येक गली-मोहल्ले में यह बात फैल गई कि महानगर टाइम्स शहीदों के लिए कुछ करने जा रहा है और इसमें हमारा कुछ योगदान होना चाहिए। सहयोग राशि जुटाने के लिए कई स्थानों पर सम्मेलन हुए, जिनमें राज्यपाल और पूर्व महाराजा दोनों बिना किसी प्रोटोकॉल के सही समय पर उपस्थित होते थे। लोगों ने यथाशक्ति सहयोग किया। गरीब से गरीब व्यक्ति भी पीछे नहीं रहा; चाहे रिक्शाचालक हो या जूते-चप्पल की मरम्मत करने वाला व्यक्ति हो, सबने अपने हिस्से का योगदान किया। इसी कारण यह संभव हो सका कि कारगिल युद्ध में शहीद 71 परिवारों को सम्मानित करके 50-50 हजार की एफडीआर उन्हें समर्पित की गई। राजस्थान से जुड़े हुए केंद्रीय मंत्रीगण, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, नेता प्रतिपक्ष, सैनिक कल्याण मंत्री मंच पर मौजूद रहे और कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध कमेंटेटर जसवंत सिंह ने किया। यह जनता का ही कार्यक्रम था; महानगर टाइम्स सिर्फ माध्यम बना।

उसी दौरान जब गुजरात की दर्दनाक घटना हुई... एक ही झटके में हजारों लोग मारे गए। विषय उठा कि जयपुर की इसमें क्या भूमिका होनी चाहिए। आर्थिक रूप से ज्यादा सहयोग करना संभव नहीं था और और वैसे भी यह काम राज्य सरकार, केंद्र सरकार तथा

गुजरात की जागरूक जनता ने युद्धस्तर पर संभाल रखा था। तब यह सोचा गया कि हमें इस रूप में सहयोग करना चाहिए, जिससे पीड़ित व्यक्ति को तुरंत लाभ मिले। भूकंप की सूचना आते ही लालटेन, चारपाई, पानी की बोतलें, दवाइयां.. इस तरह की तुरंत काम आने वाली चीजें जुटाई गईं। जयपुर के अनेक कार्यकर्ता महानगर टाइम्स के बैनर और कुछ सामग्री लेकर गुजरात के लिए रवाना हो गए। डॉक्टरों की टोलियां भी गईं। उन लोगों ने आडेसर में शिविर लगाया। वहां सिर ढंकने की भी जगह नहीं थी। जो दरियां वे लेकर गए थे, उनके सहारे कामचलाऊ तंबू बनाकर ठहरने की व्यवस्था की। धरती लगातार हिलती रहती थी, ऐसी स्थिति में भी वे लोग जमे रहे। उन्होंने मलबों में दबे हुए शव निकालने में भी मदद की। उस दौरान जयपुर से लगातार ट्रकों में भरकर राहत सामग्री भेजी जाती रही। उस समय के राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रतिपक्ष के नेता भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व में महानगर टाइम्स की ओर से सेवा निधि के अंतर्गत सहायता भेजने का काम चलता रहा। वह एक गिलहरी की भूमिका थी, लेकिन उसका स्वरूप और समकालीन महत्व ऐसा था कि वह गिलहरी भूमिका प्रेरणास्पद उदाहरण बनी।

विनोद चतुर्वेदी : महानगर की 25 वर्षों की यात्रा का पुनरावलोकन करने पर आपको किस तरह की भूमिका दिखाई देती है?

महानगर टाइम्स की एक अधूरी कहानी है और मैं इसको इस रूप में देखता हूं कि जैसे किसी क्रांतिकारी की भूमिका को सफल भी माना जा सकता है और असफल भी माना जा सकता है। फिर भी, अगर इन 25 वर्षों की झलकियां देखें तो एक वैचारिक निरंतरता नजर आएगी। इस विचारधारा के प्रमुख बिंदु हैं- आम आदमी का महत्व सरकार से बढ़कर है; राष्ट्रहित से कोई समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा; किसी की प्रशंसा या आलोचना करते समय यह परवाह नहीं करनी है कि वह किस पार्टी या विचार का समर्थक है। इस सिद्धांतों को महानगर टाइम्स का आधार बनाया गया है। महानगर टाइम्स ने सच्चाई के साथ खड़े होते हुए कभी किसी की परवाह नहीं की है। हम लोगों ने शुरुआत में ही तय किया हुआ था कि एक आम आदमी को न्याय दिलवाने के लिए अगर सरकार नाराज हो जाए तो हमें वह नाराजगी सहर्ष स्वीकार है। यही भाव लगातार बना रहा। 'किससे करें गुहार' कॉलम के जरिए आम आदमी की तकलीफों को जिस तरह सामने लाया गया, वह एक अनूठी पहल थी। उस कॉलम के माध्यम से हजारों लोगों को न्याय मिला। विधानसभा अध्यक्ष रहे हरिशंकर भाभड़ा ने फोन करके आर्थिक सहायता दी ताकि व्यक्ति को राहत मिल सके। कल्याण सिंह ने राज्यपाल के पद पर रहते हुए इस कॉलम के बारे में केंद्रीय नेतृत्व को अवगत करवाया। इस तरह, महानगर टाइम्स एक जज्बे का नाम बन गया।

इसी तरह, खबरों की गहराई तक पहुंचने के लिए हर संकट का मुकाबला करने को तत्पर रहना महानगर टाइम्स की पहचान रही। जब आई.ओ.सी. के अंदर भीषण आग लगी थी तो मीडियाकर्मी दूर से कवर कर रहे थे, क्योंकि चारों तरफ धुआं फैला हुआ था और एक निश्चित परिधि से आगे जाने में जान का खतरा था। लेकिन भीतर गए बिना आग के स्रोत और उसकी प्रचंडता के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त करना मुश्किल था। ऐसे माहौल में महानगर टाइम्स के विकास शर्मा, संदीप देशपांडे जैसे साथियों ने जान की परवाह नहीं करते हुए वहां प्रवेश किया। लेकिन अखबार की यह भावना थी कि उनके जाने की सूचना मिलते ही हम सब लोग वहां मौजूद थे। जब ग्रामीण इलाकों में जबरन धर्मांतरण का विषय आया तो महानगर टाइम्स ने प्रखर भूमिका निभाई। पूरे कार्यालय में सिर्फ एक मारुति एट हंड्रेड हुआ करती थी, जिसको ठीक से चलाना भी सब लोग नहीं जानते थे। उसमें मेरे साथ पांच पत्रकार बैठे और हम लोग उस क्षेत्र में गए, जहां धर्मांतरण करवाए जाने की सूचना मिली थी। वहां किस प्रकार से ईसाई धर्मांतरण चल रहा है और इसके कारण लोग कितने परेशान हैं, इसका पूरा विवरण सिलसिलेवार ढंग से सामने लाया गया और इस तरह वह अभियान बंद हुआ। ऐसे ही बांग्लादेशी घुसपैठियों, सिमी की आतंकवादी गतिविधियों की ओर सरकार-प्रशासन का ध्यान दिलवाने में महानगर टाइम्स की प्रमुख भूमिका रही। जयपुर में सीरियल बम ब्लास्ट हुए तो भय के माहौल की नीरवता को तोड़ने और जनता को एकजुट करके मनोबल बढ़ाने में जो योगदान रहा, उसके लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने राज्य की ओर से महानगर टाइम्स का धन्यवाद दिया। धीरे-धीरे यह वातावरण बना कि किसी भी तरह की

परेशानी में उलझा हुआ और हर तरफ से निराश व्यक्ति मदद की आस लेकर महानगर टाइम्स के कार्यालय में जा सकता है और सुनवाई जरूर होगी। जितने लोग खबर छपवाने आते थे, उतने ही लोग न्याय के लिए मदद मांगने आते थे। कई बार गांव की पीड़ित महिलाएं ऑफिस में अपनी तकलीफ बताते हुए रोने लग जाती थीं। संवाददाता घंटों तक उनके साथ बैठकर पूरी बात सुनते थे। वे यह सोचते थे कि अगर किसी को न्याय नहीं मिला तो हमारे खबर लिखने का कोई अर्थ नहीं है। इस रूप में कहा जा सकता है कि महानगर टाइम्स की पत्रकारिता एक धर्मयुद्ध की तरह रही।

आशुतोष तिवारी : आपने लंबे समय तक उन लोगों के साथ काम किया, जो पत्रकारिता के पुरोधा माने जाते हैं। उनसे सीखना और उस विरासत को नई पीढ़ी तक हस्तांतरित करना... यह आपकी यात्रा का मूलमंत्र मालूम होता है। क्या यह कहना गलत होगा कि ज्यादातर पुराने पत्रकार या तो समय से समझौते करते चले गए या फिर निराश होकर बैठ गए, इसलिए पत्रकारिता आज दिशाहीन लग रही है ?

हमें यह स्वीकार करना होगा कि पत्रकारिता का स्वरूप लगातार बदल रहा है। भारत की पत्रकारिता मूलत: स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित थी। जो भी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी हुए, उन्होंने कागज-कलम को हथियार की तरह इस्तेमाल किया। महात्मा गांधी जो लिखते थे, वह ब्रिटिश राज के खिलाफ होता था। भगत सिंह जो लिखते थे, उसमें साम्राज्यवाद के विरुद्ध बगावत थी। अरविंद घोष, स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय... इन सबके तार पत्रकारिता से जुड़े हुए थे। उस समय देश को आजाद करवाना पहली प्राथमिकता थी। इसलिए पत्रकारों के सामने एक महान उद्देश्य था, जो उन्हें प्रेरणा और साहस देता था। इस साहस का ही परिणाम था कि लोकमान्य तिलक ने जेल की परवाह नहीं की और गणेश शंकर विद्यार्थी ने जान की परवाह नहीं की। आजादी मिलने के बाद नजरिया बदला और विकास मुद्दा बना। उस दौरान जो अखबार शुरू हुए, उनमें 'ज्योति', 'उजाला', 'सवेरा' जैसे शब्दों का काफी इस्तेमाल होता था। यह नई सोच का प्रतीक था। हालांकि, पत्रकारिता तब भी मिशन का स्वरूप लिए रही। यह सिलसिला टूटा 1975 में, जब आपातकाल लगा और यह बात आम चर्चा में आई कि समाचार पत्रों पर अंकुश लगाया जा सकता है। उसके बाद से वह प्रवृत्ति किसी न किसी रूप में बनी रही। आधुनिकता बढ़ती गई; समाचार पत्रों को छापना महंगा होता गया; सर्कुलेशन के बिना अखबार का कोई नाम नहीं और सर्कुलेशन के पीछे भागना घाटे का सौदा... इस तरह अखबार अर्थनीति के गुलाम होते चले गए।

मीडिया आर्थिक रूप से जितना अधिक पराश्रित होगा, उसके लिए सच लिखना उतना ही कठिन होता जाएगा। यह उसी तरह की बात है, जैसे एक गरीब व्यक्ति अन्याय किए जाने के बावजूद किसी बाहुबली के सामने विवश हो जाता है। अगर कोई बिलियन डॉलर कंपनी एक आम आदमी की जमीन हड़प ले तो उसके पास कोर्ट के चक्कर लगाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। यह एक तथ्य है चाहे जितना कड़वा हो। इसी तरह के हालात हर स्तर पर दिखाई देंगे। गरीब व्यक्ति अमीर व्यक्ति के सामने दब जाता है; कोई देश छोटा और कमजोर है तो बड़े शक्तिशाली देश के अत्याचार के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मंच पर खुलकर आवाज नहीं उठा पाता है। ऐसे ही, पूंजी के दबाव के आगे मीडिया मजबूर महसूस करने लगता है। इसलिए यह कहना पूरी तरह ठीक नहीं होगा कि पुरानी पीढ़ी की समझौतावादी प्रवृत्ति के कारण हम यहां आ पहुंचे हैं। परिस्थितियां कुछ इस तरह और इतनी रफ्तार से बदलीं कि सिद्धांतों के लिए जीने वाला पत्रकार समय की दौड़ में पिछड़ गया। पूंजी का महत्व रातों-रात इतना बढ़ गया कि साइकिल से घूमने वाले खबरनवीस को समझ ही नहीं आया कि नए जमाने से कदमताल कैसे करनी है। हमने जिन वरिष्ठ पत्रकारों को देखा है, जिनके विचारों-आदर्शों को पढ़ा-समझा है, उनमें एक बड़ा वर्ग उन आदर्शवादी बुजुर्गों का है, जो नीयत होने के बावजूद नई व्यवस्था में कुछ कर नहीं सके, क्योंकि उस तरह की उनकी तैयारी नहीं थी। इसलिए आज की पीढ़ी को इतिहास से सबक लेते हुए न सिर्फ समय को पहचानना सीखना होगा, बल्कि भविष्य के लिए खुद को तैयार भी करना होगा। जब तक मीडिया आर्थिक रूप से मुखापेक्षी रहेगा, जब तक मीडिया को संसाधनों के लिए किसी की तरफ देखना पड़ेगा, तब तक निष्पक्षता और सच्चाई के साथ पत्रकारिता का आदर्श मृग-मरीचिका की तरह है।

दीपेन्द्र सिंह ईसरदा : आपने मीडिया को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने की बात कही। आज के समय में जब बाजारवाद दिनों-दिन हावी होता दिख रहा है, ऐसे माहौल में मीडिया किस तरह इस दिशा में बढ़ने की शुरुआत करे?

बाजारवाद का मुकाबला निश्चित रूप से बहुत कठिन है, लेकिन कठिनाई के कारण पीछे हट जाना कोई विकल्प नहीं है। निरंतर प्रयासरत रहना ही एकमात्र रास्ता है। सबसे बड़ी चीज है कर्मठता; आप काम करते रहेंगे तो रास्ते देर से सही लेकिन खुलते जरूर हैं। आप अगर गहराई से विश्लेषण करेंगे तो पत्रकारों का परिश्रम से बचना और सुविधाभोगी हो जाना भी एक तथ्य है। इसलिए अपनी पूरी क्षमता के बराबर काम करें और निरंतरता बनाए रखें। इसके बाद है सत्यनिष्ठा। जमाना चाहे जितना बदल जाए, लेकिन सच्चाई का महत्व कभी खत्म नहीं हो सकता। झूठ का प्रसार बढ़ने का एक अर्थ यह भी होता है कुछ ताकतें सच को छिपाना चाहती हैं, क्योंकि सच उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसका सकता है। यही सच की ताकत है। पत्रकार सच्चाई को अपना धर्म मानकर जिएं तो निश्चित रूप से बहुत बड़ा बदलाव आ सकता है।

मोहनलाल शर्मा : महानगर टाइम्स के लिए भविष्य का क्या रोडमैप होना चाहिए?

महानगर टाइम्स को और आधुनिक होना चाहिए; अधिक ताकतवर होना चाहिए; आत्मनिर्भरता की तरफ और तेजी से बढ़ना चाहिए; सच्चाई की आवाज को और प्रखरता के साथ उठाना चाहिए। कभी भी कोई पीड़ित व्यक्ति अपनी समस्या लेकर आए तो उसको लगना चाहिए कि कुछ हल निकलेगा। जयपुर के सांध्यकालीन अखबार के लिए इससे बड़ी बात क्या होगी कि अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, नरेंद्र मोदी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, भैरोंसिंह शेखावत, अशोक गहलोत, वसुंधरा राजे, पी. ए. संगमा, कल्याण सिंह, कलराज मिश्र जैसी हस्तियां उसकी निष्पक्षता तथा तटस्थता के कारण प्रशंसा करती रहीं। 50 गज में बने हुए, साधारण से कार्यालय की सीढ़ियां चढ़कर नरेंद्र मोदी चार मंजिल तक गए और गर्म कोको कोला पीते हुए एक-एक साथी से स्नेहपूर्ण तरीके से मिले... यह सिर्फ और सिर्फ महानगर टाइम्स की कर्तव्यनिष्ठा के कारण संभव था। उपराष्ट्रपति रहते हुए भैरोंसिंह शेखावत महानगर टाइम्स की टीम के साथ अपना जन्मदिन मनाने चले आते थे और हमारे पास उन्हें बैठाने के लिए प्लास्टिक की कुर्सियां होती थीं, जहां बैठकर वे अखबार की एक-एक खबर को ध्यान से पढ़ते रहते। किसी अखबार के कार्यालय में मुख्यमंत्री का आना घटना होती है, लेकिन अशोक गहलोत पास से गुजर रहे होते तो बिना प्रोटोकॉल के मिलने चले आते। इस तरह का प्रेम महानगर टाइम्स को मिलता रहा, क्योंकि महानगर टाइम्स ने कोई पक्षपात नहीं किया, किसी की राजनीतिक पहचान को अपनी आलोचना या प्रशंसा का आधार नहीं बनाया। सबसे बड़ी बात कि महानगर टाइम्स के पास जो कुछ भी है, उसमें कोई छिपी हुई संपत्ति या पूंजी नहीं है। कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि उसने धन देकर महानगर टाइम्स में कुछ काम करवाया हो। यह हमारी पूंजी है, विरासत है। हमें इस विरासत को आगे लेकर जाना और इसके साथ-साथ स्वयं को सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत रहना... यही रोडमैप है।

शिवम ठाकुर : रजत जयंती पर समाचार पत्र वितरकों और पाठकों के लिए आपका क्या संदेश है? इसके अलावा भी किसी का विशेष उल्लेख अगर आप करना चाहें।

समाचार पत्र के वितरक आधार स्तंभ हैं और पाठक आत्मा हैं। समाचार पत्र वितरकों ने महानगर टाइम्स के प्रति जो लगाव दिखाया है, वह इससे पहले राजस्थान के इतिहास में केवल पत्रिका के लिए रहा है। यही स्थिति पाठकों की भी है। उन्होंने भरपूर प्रेम दिया, जरूरत के समय में संबल प्रदान किया। पाठकों में से ही विज्ञापनदाता निकले। पाठकों में से ही लोग जागरूक नागरिक की भूमिका में साथ जुड़ते गए और अपने को महानगर परिवार का हिस्सा माना। इन सबके बिना महानगर टाइम्स का वर्तमान स्वरूप और अतीत का सफर अधूरा है... न ही इनके बिना कोई भविष्य है। सभी के प्रति शुभकामना और आदर भाव है। प्रभु की कृपा से हमारा यह आत्मीयतापूर्ण संबंध हमेशा बना रहे। इस अवसर पर मैं विशेष रूप से अपने उन साथियों को याद कर रहा हूं, जिन्होंने बहुत कुर्बानियां दी हैं। कोरोना के क्रूर काल में हमने अपने परिवार के सदस्यों को खोया है। उनका कर्मठ स्वरूप और मुस्कुराता हुआ चेहरा सदैव हमारी स्मृतियों में रहेगा।

महानगर टाइम्स का लोकार्पण

23 नवंबर , 1997 को महानगर टाइम्स का लोकार्पण करते भैरोंसिंह शेखावत, पी.ए. संगमा, अशोक गहलोत और प्रभाष जोशी

जयपुर के विभिन्न वर्गों के गणमान्य नागरिक इस संकल्प समारोह के साक्षी बने; जगदीप धनखड़ और घनश्याम तिवाड़ी शामिल।

महानगर टाइम्स का लोकार्पण

23 नवंबर, 1997

निवेदन

अंधियारा होने से पहले खबरों की रोशनी लेकर उपस्थित हो रहा है सायंकालीन दैनिक जयपुर महानगर टाइम्स। पत्रकारिता के फलक पर छाए कुहासे और शोर के प्रदूषित माहौल में गोधूलि के पवित्र वातावरण का अहसास कराने के संकल्प के साथ। एक ऐसे अखबार का स्वप्न साकार करने का प्रयत्न किया जा रहा है जो विश्वप्रसिद्ध गुलाबी नगर का जागरूक प्रहरी हो तथा जयपुर की आवाज बन जाए। लोग स्याही से छपे हरफों में अपनी भावना को मुखरित होता देखें तथा जनता को लगे कि यह उनका अपना अखबार है।

समाचार पत्रों की कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौर में बड़े पूंजीपतियों के अलावा अन्य किसी का अस्तित्व बनाये रख पाना मुश्किल हो गया है। इसके बावजूद हर तूफान से टकरा जाने का साहस जुटाकर अखबार निकालने का बीड़ा उठाया है।

'महानगर टाइम्स' व्यावसायिक सोच का प्रतिफल या लाभ कमाने के उद्देश्य से शुरू किया गया धंधा नहीं है। इसके पीछे सोच है- निष्पक्ष, राष्ट्रीय और विश्वसनीय अखबार निकालने का। पत्रकारिता के पेशे को निष्पक्ष बनाए रखने की पक्षधर टीम ने जयपुर की जनता पर पूरा भरोसा करके एक सम्पूर्ण व जवाबदेह अखबार निकालने का बीड़ा उठाया है। इस कोशिश में न तो किसी जोखिम की परवाह है और न आने वाली चुनौतियों का कोई भय है। जयपुर की जनता की आवाज को मुखर तरीके से बुलंद करने की तमन्ना है और हर दु:खी की पीड़ा में सहारा बनने की लालसा है। कोई पीड़ित या दु:खी अखबार के दफ्तर की सीढ़ियों पर चढ़ेगा तो उसे लगेगा कि वह अपने सहयोगियों के पास जा रहा है। प्रकाशनों का शुरू होना और बंद होना सिर्फ पैसे पर निर्भर नहीं है। अम्बानी और डालमिया के अखबार नहीं चल पाए तथा जैन ग्रुप के अखबार भी बंद होते रहे हैं। जनभावना की अभिव्यक्ति के बूते पर ही 'इण्डियन एक्सप्रेस' आपातकाल की चुनौती से टक्कर सका था। बस एक ही संकल्प है कि अखबार की कलम को न तो कोई खरीद सके, न झुका सके। जयपुर के लोगों की भावना को ध्यान में रखकर महानगर टाइम्स आकार ले रहा है तथा यह यहां के लाखों लोगों की आवाज बन जाए यही कामना है।

हमारी कोशिश रहेगी कि गुलाबी नगर की जनता को स्वर मिले, उसका आत्मसम्मान कायम हो और इन्सान की कीमत समझी जाए। अत्याचार के खिलाफ लोग जागरूक हों और एक दूसरे की पीड़ा को महसूस करें। महानगर के रूप में करवट लेता गुलाबी नगर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहे और कोई टेढ़ी आंख करके इसकी ओर नहीं देख सके। जनता से जुटाए गए तेल से हम यह दिया जलाने का प्रयत्न कर रहे हैं जो टिमटिमाता हुआ भी सतत् रोशनी देगा। हम आपके भरोसे को कायम रखेंगे। इस अखबार में आपको न तो परायेपन का अहसास होगा और न घमंड का। यह आपका अपना अखबार होगा। हमारे विनम्र प्रयास को आपकी शुभकामनाओं की हमेशा आवश्यकता रहेगी।

— गोपाल शर्मा

मुझे जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि टेबुलॉयड सांध्यकालीन दैनिक के रूप में जयपुर महानगर टाइम्स प्रारंभ हो रहा है। इसकी सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

-अटलबिहारी वाजपेयी

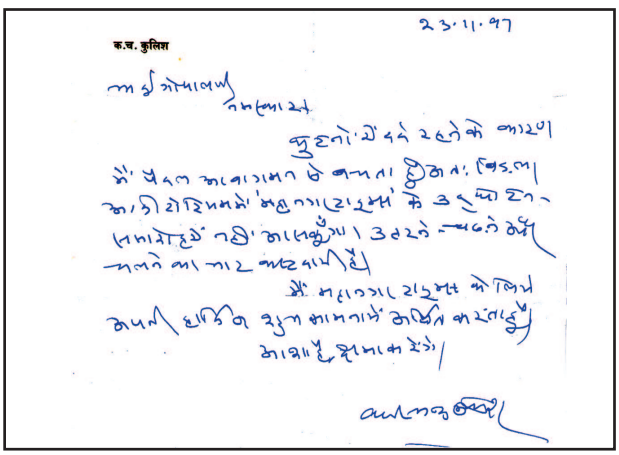

राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचंद्र कुलिश का शुभकामना संदेश

लोकार्पण समारोह का विधिवत उद्घाटन करते लोकसभा अध्यक्ष पी.ए. संगमा और राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत

लोकार्पण समारोह बना संकल्प दिवस

देश का आदर्श समाचार पत्र बनेगा महानगर टाइम्स : पी. ए. संगमा

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि गोपाल शर्मा और उनके साथी मिलकर जयपुर में एक नया अखबार शुरू कर रहे हैं और इसके लोकार्पण के लिए मुझे बुलाया गया है। जयपुर आकर मैं बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। गोपाल शर्मा और उनके साथियों को इस महत्वाकांक्षी और साहसिक कार्य के लिए मैं बधाई देता हूं। महत्वाकांक्षी और साहसिक कार्य इसलिए कि अखबार शुरू करना और चलाना कोई आसान काम नहीं है। मैंने भी एक अखबार शुरू किया था। मैं उसका संपादक था, इसलिए जानता हूं कि यह कितना श्रमसाध्य कार्य था। आज सुबह ही गोपाल शर्मा और उनके साथियों से मेरी बातचीत हो रही थी। मुझे इस बातचीत में बड़ा आनंद आया। साथ ही, संतोष भी हुआ कि ये लोग वाकई एक महत्वाकांक्षी और साहसिक काम करने के लिए कृतसंकल्पित हैं। इन लोगों ने मुझे अपने अखबार की जो विस्तृत परिकल्पना बताई, उसके कारण ही मुझे पूरा संतोष हुआ। इन लोगों ने मुझे बताया कि इनका अखबार किसी खास राजनीतिक दल, पंथ-वाद, विचारधारा या दर्शन का पोषक नहीं होकर एक स्वतंत्र और निष्पक्ष अखबार होगा। मुझे सबसे ज्यादा खुशी तो तब हुई, जब इन लोगों ने मुझे बताया कि इस अखबार के प्रबंधन ने उन प्रतिष्ठानों के विज्ञापन भी अस्वीकार करने का निर्णय किया है, जिन्हें समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है। मैं इसे गजब की आदर्शवादिता मानता हूं। इसके लिए मैं इन्हें हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूं और इनके सौभाग्य तथा सफलता की कामना करता हूं। आज हमारे देश में ऐसे ही अखबारों की जरूरत है। प्रिंट मीडिया पर यह जिम्मेदारी आती है कि वह सूचना का दोतरफा संवाहक बने। उसे सिर्फ ऊपर से नीचे तक सूचना का प्रसार करके ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझना चाहिए। उसे नीचे से ऊपर अर्थात् गांव-ढाणी से जयपुर-दिल्ली तक सूचना पहुंचाने का काम भी करना है। मुझे खुशी है कि महानगर टाइम्स ने यह बीड़ा उठाया है। मैं विश्वासपूर्वक, बेहिचक कह सकता हूं कि महानगर टाइम्स देश का आदर्श अखबार बनेगा। मैं गोपाल शर्मा और उनके साथियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं और दृढ़ विश्वास प्रकट करता हूं कि यह अखबार अपने संकल्प से डिगेगा नहीं।

पूंजीवाद और विदेशी संस्कृति के दुष्प्रभावों से सावधान रहने की जरूरतः भैरोंसिंह शेखावत

गोपाल शर्मा ने अपना समाचार पत्र शुरू करने का निर्णय लिया है, मेरी शुभकामनाएं उनके साथ हैं। मैं इतना कहना चाहता हूं कि जिस संकल्प शक्ति के आधार पर उन्होंने समाचार पत्र निकालने का संकल्प किया है, वह शक्ति कई बार विचलित हो जाती है। इसका प्रमुख कारण आर्थिक होता है। अगर आर्थिक घाटा हो तो संकल्प शक्ति विचलित होगी। आर्थिक लाभ ज्यादा होने लगे तो भी संकल्प शक्ति निश्चित रूप से विचलित होगी। लेकिन व्यक्ति की मानसिकता का व्यावसायीकरण हो जाए, यह सबसे ज्यादा खतरनाक है। इसी खतरनाक पहलू के कारण धीरे-धीरे समाचार पत्रों का व्यावसायीकरण हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से हमारी मानसिकता यह बन गई है कि जो विदेश का है वह अच्छा है और जो घर का है, वह अच्छा नहीं है। यदि समय रहते हमने यह मानसिकता नहीं बदली तो जैसे हर क्षेत्र में विदेशी पूंजी के बिना कोई उद्योग नहीं लग सकता, तकनीक के बिना किसी प्रकार का इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित नहीं हो सकता; वैसे ही, इस खतरे से देश को और समाचार पत्र वालों को सावधान रहना पड़ेगा। मीडिया के ऊपर मल्टीनेशनल कंपनियों और विदेशी संस्कृति का प्रभाव नहीं जम पाए। व्यवसाय करने वाले हों या फिर संकल्प शक्ति के साथ अखबार निकालने वाले हों, यदि वे इस खतरे से सावधान नहीं हुए तो उनके जरिए समाज को बहुत खतरा होगा। ऐसी स्थिति में गोपाल शर्मा जिस संकल्प शक्ति के साथ समाचार पत्र निकाल रहे हैं, मैं चाहूंगा कि यह शक्ति बनी रहे और उनका अखबार राजस्थान और देश की सेवा कर सके। मेरा विश्वास है कि वे निश्चित रूप से इसका ध्यान रखेंगे। यह अखबार फले-फूले, ऐसी मैं उनको शुभकामनाएं देता हूं। गोपाल शर्मा से मेरा बहुत निकट का संबंध रहा है। मेरा उनके प्रति बहुत स्नेह है। उनके जीवन की हर उन्नति में मैंने भी खुशी का अनुभव किया है। मैं आशा करता हूं कि उनका यह अखबार निश्चित रूप से समाज, देश और प्रदेश की सेवा करेगा।

लोकार्पण समारोह बना संकल्प दिवस

'दो तोपों' के बीच अपना अखबार निकालने की चुनौती: प्रभाष जोशी

एक अखबार का प्रकाशन मात्र एक अखबार का प्रकाशन नहीं होता, वह एक बयान होता है। अखबार प्रकाशन के अवसर पर बधाई देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि अखबार चलाने वाले लोग क्या करना चाहते हैं, यह जानना भी जरूरी है। एक अखबार का प्रकाशन कुल मिलाकर देश की पत्रकारिता के मूल्यांकन का भी अवसर होता है। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में देखें तो क्या गोपाल शर्मा 'दो तोपों' के बीच अपना अखबार निकाल पाएंगे? दोनों अखबारों के बीच व्यापारिक होड़ को और तेज करेंगे या यह साबित करेंगे कि सच्ची पत्रकारिता का व्यावसायिकता से कोई लेना-देना नहीं है? सच्ची पत्रकारिता वह है, जो पाठकों के लिए की जाए। मैं यह मानता हूं कि मात्र दो अखबार ही नहीं, देश भर के अखबार व्यापारिकता की होड़ में लगे हुए हैं। अखबारों में पाठकों की भूमिका व्यावसायिकता के आगे दोयम दर्जे की हो गई है। आज इस बात पर ध्यान दिया जा रहा है कि अखबार की बिक्री क्या है; उसकी साख और विश्वसनीयता पर किसी का ध्यान नहीं जाता। आज इस बात पर ध्यान दिया जा रहा है कि अखबार की व्यावसायिकता कैसे बढ़े। यह स्थिति देशहित में नहीं है। जिस देश में अखबार का इतना बड़ा स्थान हो, वहां अखबार साख भूलकर व्यावसायिकता की तरफ बढ़ रहे हैं। अतः अखबारों के महत्व को बनाए रखना होगा। अखबार 'प्रॉडक्ट' नहीं हैं। इस देश की आजादी की लड़ाई कोलगेट और लक्स साबुन जैसे किसी प्रॉडक्ट ने नहीं लड़ी है, बल्कि लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी जैसे संपादकों ने लड़ी है। अखबार अगर प्रॉडक्ट होता तो क्या आप लोग इतनी बड़ी संख्या में यहां आकर बैठते? स्कूटर के लांच होने से देश में क्रांति नहीं आती, लेकिन अखबार से देश में क्रांति आ जाती है। किसी भी देश की प्रेस यह दावा नहीं कर सकती कि हमने देश की आजादी में उतनी भूमिका निभाई, जितनी भारतीय प्रेस ने। बाजार में बिकना आसान है, लेकिन देश हित बाजार से भी बड़ा होता है। अखबार प्रतिष्ठा और मूल्य देता है। पत्रकारिता का पेशा काफी गरिमामय होता है। जनता में अखबारों का विश्वास अभी डिगा नहीं है। गोपाल शर्मा और उनकी टीम को मेरी शुभकामनाएं।

अच्छी भावना से शुरू किया गया कार्य कामयाब होता है : अशोक गहलोत

महानगर टाइम्स समाचार पत्र के रूप में अभिनव शुरुआत करने के लिए मैं गोपाल शर्मा और इनके सभी साथियों को मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूं। समाचार पत्र निकालना एक चुनौती भरा काम है। गोपाल शर्मा के विचारों से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। उन्होंने जब मुझसे इस संबंध में चर्चा की तो मैंने उनसे कई तरह के सवाल किए थे। उनमें एक सवाल यह भी था कि आप साथियों को लेकर अखबार निकाल रहे हैं, लेकिन यह साथ कब तक निभेगा? कोई नया प्रयोग करें और वह अधूरा रह जाए तो अभी जो आपकी उम्र है, उस हिसाब से अभी आपका लंबा भविष्य शेष है। इन्होंने जो बात कही, उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। इन्होंने कहा कि जब ऐसी स्थिति आएगी, तब तक महानगर टाइम्स अपने पैरों पर खड़ा हो जाएगा। कभी-कभी ऐसी स्थिति भी आ जाती है कि मतभेद हो जाते हैं। तब मैं मान लूंगा कि मैंने जो संकल्प लिया था, उसे पूरा करके कामयाबी हासिल कर ली और अब इसे छोड़कर किसी दूसरे काम में लग जाना है। ऐसे में किसी भी तरह का टकराव होने की स्थिति पैदा नहीं होगी। ऐसी अच्छी भावना के साथ जो कार्य शुरु किया जाता है, वह हमेशा कामयाब होता है। अक्सर कहा जाता है कि लोकतंत्र में चौथा स्तंभ मजबूत बना रहना चाहिए। यह तभी हो सकता है, जब लिखने वाले लोग हों और उन्हें लिखने की स्वतंत्रता हो। आज देश में बड़े-बड़े समाचार पत्र निकल रहे हैं। वे लिखने वाले की स्वतंत्रता की रक्षा नहीं कर पाते क्योंकि उनके मालिक बड़े-बड़े घराने के लोग हैं, पूंजीपति-उद्योगपति हैं। इस स्थिति में क्या हम अखबारों की विश्वसनीयता बनाए रखने में कामयाब हो पाएंगे? मेरा मानना है कि जो लिखने वाला है, उसकी इतनी विश्वसनीयता होनी चाहिए कि समाज उस पर विश्वास कर सके। ऐसे में मुझे पूरा विश्वास है कि महानगर टाइम्स अपनी अलग छाप छोड़ने में कामयाब होगा। गोपाल शर्मा आज जो नई शुरुआत कर रहे हैं, वह नया इतिहास बनाएगी। मैं उम्मीद करता हूं कि एक नया रास्ता और एक नई सोच जो पैदा हुई है, उसे पूरा करने में वे कामयाब होंगे।

कारगिल शहीद समर्पण समारोह

दुधमुंहे बच्चे लिए विधवाओं को देख लोगों की आंखें बहने लगीं

कारगिल शहीद की वीर विधवा को सम्मानित करते राज्यपाल अंशुमान सिंह और केंद्रीय रक्षा मंत्री जसवंत सिंह

कैप्टन अमित भारद्वाज के माता-पिता का सम्मान

- कारगिल के युद्ध में सर्वोच्च बलिदान देकर राजस्थान की गौरवशाली परम्परा को रक्त से सींचने वाले रणबांकुरों के परिजनों के सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह में जयपुर का प्रबुद्ध वर्ग उमड़ पड़ा। खचाखच भरे बिड़ला ऑडिटोरियम में कारगिल युद्ध के सभी 71 शहीदों के परिजन पहली बार एक साथ एकत्रित थे। दुधमुंहें बच्चों को गोद में लेकर आई शहीदों की वीर पत्नियां मंच पर सम्मान ग्रहण करने बढ़ीं तो उपस्थित जनसमूह करीब एक घंटे तक लगातार तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन करता रहा।

- महानगर टाइम्स द्वारा आयोजित इस समारोह में केंद्रीय रक्षा मंत्री जसवंत सिंह, राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत, केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री सुभाष महरिया, सैनिक कल्याण मंत्री डॉ. चंद्रभान उपस्थित थे। हर शहीद परिवार को 51 हजार रूपए की एफ.डी. दी गई। धातु पर बना हुआ प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया।

कारगिल शहीद समर्पण समारोह

राजस्थान के सभी 71 परिवारों को 51-51 हजार की राशि समर्पित

देश का एकमात्र समारोह, जिसमें प्रदेश के सभी शहीद परिवार एक साथ उपस्थित हुए

(बाएं से) जसवंत सिंह, जसदेव सिंह, गोपाल शर्मा, अशोक गहलोत, अंशुमान सिंह, भैरोंसिंह शेखावत, सुभाष महरिया और डॉ. चंद्रभान

कारगिल शहीद समर्पण समारोह

बिड़ला ऑडिटोरियम में उपस्थित जयपुर के प्रबुद्ध नागरिक गण

- शहीदों के प्रति सम्मान और आदर का जज्बा इस कदर था कि बिड़ला सभागार में शहीदों के परिजनों को सम्मानित करने के दौरान पूरे पौन घंटे तक बिड़ला सभागार में तालियां बजती रहीं। ज्यों ही उद्घोषक द्वारा शहीद का नाम पुकारा जाता और परिजन सम्मान ग्रहण करते, तालियों की गड़गडाहट और तेज हो जाती।

वंदेमातरम के गायन से पैदा हुआ देशभक्ति का जज्बा

- जिन कुछ शहीदों की पत्नियां नहीं पहुंचीं, उनके माता-पिता या भाई सम्मान ग्रहण करने आए। वे ऊंचा मस्तक करके मंच पर चढ़े तो लोगों का सीना गर्व से चौड़ा हो गया और सबका हृदय पुकार-पुकार कह रहा था- हमें आप पर गर्व है; आपने ऐसे सपूत को पैदा किया, जिन्होंने अपना मस्तक दे दिया लेकिन भारत माता का भाल नहीं झुकने दिया।

राजापार्क में आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल अंशुमान सिंह,
जयपुर के पूर्व महाराजा ब्रिगेडियर भवानी सिंह और अन्य

- महानगर टाइम्स की ओर से कारगिल शहीद समर्पण निधि की स्थापना करके सघन एकत्रिकरण अभियान चलाया गया। विभिन्न मोहल्लों में बड़े कवि सम्मेलन आयोजित किए गए। सभी स्थानों पर राज्यपाल अंशुमान सिंह और जयपुर के पूर्व महाराजा ब्रिगेडियर भवानी सिंह उपस्थित थे।

कारगिल शहीद समर्पण समारोह

जसवंत सिंह
केंद्रीय रक्षा मंत्री

मेरा मानना है कि कारगिल पूरे विश्व का सबसे दुर्गम रण क्षेत्र है। कारगिल युद्ध में विदेशों ने भी भारत के सैनिकों की बहादुरी का लोहा माना। हमारे सैनिकों ने पहाड़ों पर पहले से ही मोर्चा संभालकर बैठे दुश्मनों को पराजित किया। इतने कम समय में उन मोर्चों से दुश्मन को हटाना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। सामरिक तौर पर देखा जाए तो कारगिल सबसे बड़ी चुनौती थी और हमारे जवानों ने सिद्ध कर दिया कि सैन्य शौर्य क्या होता है। टेलीविजन के माध्यम से कारगिल युद्ध हर भारतीय के दिल तक पहुंच गया। हमने यह तय किया था कि युद्ध के बाद पाकिस्तान का सच पूरी दुनिया के सामने आए। सच सामने आने के बाद इसकी कीमत पाकिस्तान को चुकानी पड़ रही है और आने वाले समय में और भी पड़ेगी। यह ऐसा अवसर था, जब सैन्य रक्षा और विदेशी रक्षा दोनों एक होकर काम कर रहे थे। मैं गोपाल शर्मा को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने कारगिल युद्ध के नायकों को श्रद्धांजलि देने के लिए पहली बार ऐसे अभूतपूर्व कार्यक्रम का आयोजन किया है। एक ही स्थान पर राजस्थान के शहीद परिवारों के बीच में आकर मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। यह ऐतिहासिक कार्यक्रम हमेशा अविस्मरणीय रहेगा।

अंशुमान सिंह
राज्यपाल

कारगिल शहीद लेफ्टिनेंट अमित भारद्वाज की पार्थिव देह जयपुर पहुंची तो मैं सबसे पहले उनके घर गया और उनके माता-पिता से मिला। उनकी आंखों में एक भी आंसू नहीं था। मैंने उन्हें कुछ राशि देने की कोशिश की। उन्होंने इनकार करते हुए सिर्फ यह इच्छा जताई कि जिस भूमि के लिए उनके बेटे ने शहादत दी, उसका एक इंच भी पाकिस्तान को नहीं दिया जाए। राजस्थान के हर व्यक्ति में यह जुनून था कि शहीद परिवारों की सहायता की जाए। छोटे-छोटे बच्चों ने राजभवन में आकर मुझे 600-700 रुपए दिए। जब गोपाल शर्मा ने राजापार्क व्यापार मंडल के साथ मिलकर कार्यक्रम रखा तो मैं भी वहां गया। बड़ी संख्या में आम लोग जुटे हुए थे। गोपाल शर्मा ने कहा कि चादरें बिछा दी जाएं, जिन पर लोग स्वेच्छा से शहीदों के लिए योगदान करें। हमने उस दृश्य का अंदाजा भी नहीं लगाया था, जिस तरह लोगों ने चादरों पर पैसे रखना शुरू किया और आधे घंटे के भीतर कई लाख रुपए एकत्र हो गए। मैं गोपाल शर्मा को बधाई और धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने शहीदों के परिजनों को एकत्रित किया और विभिन्न राजनीतिक दलों के लोगों को सम्मान समारोह में शामिल होने का मौका दिया।

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

गोपाल शर्मा ने मुझे बताया कि उनकी काफी समय से यह इच्छा थी उन शहीदों के परिवारों का सम्मान किया जाए, जिन्होंने कारगिल युद्ध में भारत का मान बढ़ाया है। कारगिल युद्ध कोई मामूली युद्ध नहीं था, कठिन परिस्थिति वाला युद्ध था। जब तक जान की बाजी लगाने का फैसला नहीं हो जाए, तब तक युद्ध में आगे बढ़ने का कोई महत्व नहीं था। मुझे प्रसन्नता है कि देश के महान सपूतों ने अपनी जान की बाजी लगाकर पराक्रम और शौर्य के साथ दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। उन्होंने यह साबित कर दिया कि चाहे किसी भी तरफ से दुश्मन हमारे ऊपर हमला करे, उसे मुंहतोड़ जवाब दे दिया जाएगा। मैं करीब 50-60 शहीद परिवारों से मिला। उनका कहना था कि हमारे बेटे ने कहा था कि एक दिन तुम्हारा नाम रोशन करूंगा; आखिर उसने यह करके दिखा दिया। मुझे तो इस बात का गर्व है कि मैं ऐसे प्रदेश का मुख्यमंत्री बना हूं, जिसके एक-एक परिवार में देश प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। आज का यह कार्यक्रम उन सभी को समर्पित है। इस आयोजन के लिए मैं अपनी ओर से गोपाल शर्मा को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं।

भैरोंसिंह शेखावत
पूर्व मुख्यमंत्री

राजस्थान के वीरों ने देश के लिए हमेशा अपने प्राण न्योछावर किए हैं। राजस्थान के कुछ जिले तो ऐसे हैं, जिनमें एक-एक गांव में पांच-पांच शहीद हो गए; फिर भी उनके मन में भय नहीं है कि कोई और युद्ध होगा तो हम नहीं जाएंगे। कारगिल युद्ध के दौरान राजस्थान में जहां भी शहीद की शव यात्रा निकली या दाह संस्कार हुआ, वहां मुख्यमंत्री पहुंचे और मैं भी गया। मुझे एक उदाहरण नहीं मिला कि कहीं शहीद का परिवार रोता नजर आया हो। राजस्थान के करीब 17 हजार लोगों ने स्वेच्छा से यह प्रस्ताव रखा है कि हमें कारगिल के युद्ध में शामिल होना है। ऐसा उदाहरण आपको पूरे हिंदुस्तान में नहीं मिल सकता है। मैं कारगिल शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं इनके परिवार के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि सहायता करने के साथ ही इनकी हर समस्या का समाधान भी सरकार करेगी। मुझे बहुत खुशी है कि आज हम सब शहीदों का सम्मान कर रहे हैं और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।
मैं गोपाल शर्मा को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आज इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया है।

गुजरात भूकंप पीड़ितों के लिए सेवा निधि

'गुजरात हम तुम्हारे साथ हैं' और 'भारत माता की जय' के नारों के बीच राहत सामग्री के काफिले भूकम्प पीड़ितों के लिए रवाना किए गए।
काफिले के साथ राहत टोली, चिकित्सक और कार्यकर्ता भी गुजरात गए और भूकंप प्रभावित अडेसर में राहत शिविर लगाया।
विभिन्न चरणों में राहत सामग्री रवाना करते राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और नेता प्रतिपक्ष भैरोंसिंह शेखावत।

18 ट्रक राहत सामग्री भिजवाई

- 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में भीषण भूकंप के तुरंत बाद पीड़ितों की सहायता के लिए महानगर टाइम्स ने जयपुर के प्रबुद्ध नागरिकों के साथ मिलकर सेवा निधि का गठन किया। गोपाल शर्मा को इसका संयोजक बनाया गया। जयपुर के व्यापार मंडल, सामाजिक संगठन और शिक्षण संस्थानों ने इसमें भरपूर सहयोग किया।
- महानगर टाइम्स द्वारा संचालित सेवा निधि का अस्थाई शिविर कोई आरामदेह जगह नहीं थी बल्कि हालात तो ये थे कि सिर ढंकने तक कुछ नहीं था। सेवा निधि के कार्यकर्ताओं ने चारों ओर लकड़ियां डालकर उन्हें दरियों से ढंक दिया और उसी के बीच में रात गुजारते थे और सुबह होते ही गांव में निकल पड़ते थे।
- राहत सामग्री का वितरण काफी कठिन काम था। जहां राहत सामग्री थी वहां लेने वाले नहीं थे और जहां लेने वाले थे वहां तक राहत सामग्री नहीं पहुंची थी।
- जयपुर के हजारों स्कूली छात्र-छात्राओं ने झोली फैलाकर शहर में अनूठा दृश्य उपस्थित कर दिया। ये रैलियां शहर में एक साथ प्रमुख स्थानों से रवाना हुईं तथा शहर के सभी प्रमुख बाजारों से होती हुई अलग-अलग स्थानों पर समाप्त हुईं।

‘ऑपरेशन पिंक’ के बुलडोजरों को करवाया बंद

अन्याय और भेदभाव पर आधारित तुगलकी अभियान के खिलाफ नेतृत्व

10 मार्च, 2000

आंखें खोलिए, गहलोत साहब !

गोपाल शर्मा

क्या जयपुर में इमरजेंसी लगी हुई है? ... गुलाबी नगर को ‘हैरिटेज सिटी’ बनाने के लिए अतिक्रमण हटाने की लोकलुभावना ‘डायनासोर कार्रवाई’ के दौरान खुलकर ज्यादतियां और भेदभावपूर्ण कार्रवाई हो रही हैं। कानून का राज खत्म हो रहा है और जनता को मूलभूत अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। ... न्यायालय के स्थगन आदेशों की प्रतियां फाड़ी जा रही हैं, निगम-जेडीए के अनुमति पत्रों को हवा में उछाला जा रहा है और पुराने पट्टों तथा अनुबंध पत्रों को कोई देखने वाला नहीं है। अपनी जिन्दगी भर की कमाई को सामने लुटता देखकर विरोध करने वालों को डंडे मारे जा रहे हैं। बड़बोले मंत्री फौज बुलाकर कथित ‘अतिक्रमण’ हटाने की धमकी दे रहे हैं और जयपुर के निर्वाचित बोर्ड के अधिकार छीन लिए गए हैं !

आंखें खोलिए, गहलोत साहब ! ... इमरजेंसी में यही हुआ था। ... इस समय सिर्फ जेल खाली हैं; वह भी इसलिए कि जयपुर की मुख्य पार्टी भाजपा मरी हुई है, शहर के ज्यादातर नेता ‘दुकानदारी’ में लगे हैं और नपुंसक बोर्ड आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा है!

स्टेशन के सामने खुला मैदान और चौड़ा हुआ सोडाला सभी को अच्छा लगता है; अतिक्रमण हटने भी चाहिए लेकिन जनता को न्याय के अधिकार से वंचित होते नहीं देखा जा सकता। उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के निर्देशों पर नजर डालिए। लोक कल्याणकारी प्रजातांत्रिक शासन में अतिक्रमणकारियों को उठाकर समुद्र में नहीं फेंका जा सकता। सरकार की जिम्मेदारी तो लोगों को (शेष पृष्ठ 12 पर)

जयपुर

स्थानीय समाचार, राष्ट्रीय दृष्टिकोण

महानगर टाइम्स

न्यूनतम दर पर अधिकतम लाभ उठावें महानगर टाइम्स में विज्ञापन लगावें

(विज्ञापन दर मात्र 100 रू. प्रति कालम प्रति सेंटीमीटर)

सम्पर्क : विज्ञापन विभाग

फोन: 741999, 742633

सांध्यकालीन वर्ष 3 अंक 105 जयपुर, 28 मार्च 2000, मंगलवार पृष्ठ 12 मूल्य 1 रुपया

ऑपरेशन पिंक के खिलाफ जयपुर की जनता उमड़ पड़ी

जयपुर, 28 मार्च (मसं)। ऑपरेशन पिंक की ज्यादतियों के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी के आह्वान पर जयपुर की जनता आज विधानसभा के बाहर उमड़ पड़ी। हजारों लोगों ने राज्य सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए जनभावना का इजहार किया। पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत जनता के बीच आए तो राजस्थान का एक ही सिंह-भैरोंसिंह-भैरोंसिंह के नारों से वातावरण गूंज उठा।

‘ऑपरेशन पिंक बन्द करो बन्द करो’, तानाशाही नहीं चलेगी नहीं चलेगी, तथा अशोक गहलोत हाय-हाय, धारीवाल हाय-हाय, मंजीत सिंह हाय-हाय के नारों के साथ भाजपा संघर्ष समिति का जुलूस रामनिवास बाग से विधानसभा के लिए रवाना हुआ। जुलूस के साथ चल रहे लोगों में प्रदर्शन के प्रति जोश और उत्साह था तो तोड़फोड़ के खिलाफ दुख और आक्रोश के भाव भी नजर आ रहे थे। जुलूस का अगला सिरा जब बड़ी चौपड़ पर था तो पिछले सिरा बांपूबाजार के बीच में चल रहा था। पूरी सड़क को घेरे लोग नारे लगाते रोने का उपक्रम करते और सरकार को कोसते हुए चल रहे थे। जुलूस का नेतृत्व सांसद गिरधारी लाल भार्गव, महापौर निर्मला वर्मा, पवन शर्मा, कालीचरण सर्राफ, राजपालसिंह, प्रताप सिंह खाचरियावास, रामेश्वर भारद्वाज. पूर्व महापौर मोहनलाल गुप्ता, पूर्व उपमहापौर घनश्याम शर्मा राजापार्क व्यापार मंडल के अध्यक्ष रवि नैय्यर तथा चन्द्र भाटिया और झोटवाड़ा व्यापार मंडल के (शेष पृष्ठ 12 पर)

50 वर्षों में ऐसा जुल्म नहीं देखा : भैरोंसिंह

जयपुर, 28 मार्च (मसं)। पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत का कहना है कि उन्होंने पचास वर्ष के राजनीतिक जीवन में शहर के सौंदर्यीकरण के नाम पर जनता पर इस तरह का जुंल्म नहीं देखा। यह (शेष पृष्ठ 12 पर)

भाजपा के आह्वान पर विधानसभा घेराव में उमड़े लोग। -फोटो : शहजाद खान

- 1998 के विधानसभा चुनाव में प्रचंड बहुमत से सत्ता में आने के बाद मदांध होकर सौंदर्यीकरण के नाम पर तत्कालीन गहलोत सरकार ने मार्च, 2000 में बहुचर्चित ‘ऑपरेशन पिंक’ चलाया। अफसरों को जयपुर में दमनचक्र चलाने की खुली छूट देकर जिस तरह ‘डायनासोर’ ने अपने क्रूर पंजों से गरीब-गुरबों, मजदूरों के आशियाने और रोजी-रोटी के ठिकाने उजाड़े उसके खिलाफ सबसे पहला और सशक्त प्रतिकार करने के लिए ‘महानगर’ आगे आया। एक स्वतंत्र और निर्भीक समाचार पत्र के रूप में ‘महानगर’ जयपुर की बुलंद आवाज बन गया।
- शासन के अत्याचारों की श्रृंखला पराकाष्ठा को पार कर चुकी थी। पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत जैसे जननेता को भी आहत होकर यह कहना पड़ा कि उन्होंने 50 वर्ष के अपने राजनीतिक जीवन में शहर के सौंदर्यीकरण के नाम पर जनता पर ऐसा जुल्म नहीं देखा। महानगर टाइम्स के प्रखर अभियान के कारण भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री भंवरलाल शर्मा आमरण अनशन पर बैठे।
- ‘महानगर’ की भूमिका का चमत्कृत असर ऐसा रहा कि जयपुर के सामाजिक-स्वयंसेवी संगठनों के साथ ही भाजपा के नेता-कार्यकर्ता सभी संगठित होकर शासन के दमन चक्र का खुला विरोध करने के लिए सीना तानकर खड़े हो गए। आखिरकार जयपुर का हृदय स्थल कही जाने वाली माणक चौक चौपड़ से सरकारी लाव-लश्कर को अपने पंजे पीछे खींचने पड़े। जयपुर के हित में महानगर टाइम्स की सजग भूमिका ने ‘सांगठनिक क्षमता’ का अहसास करवाया।

ऑपरेशन पिंक के खिलाफ गुस्सा भड़का

✻ दो दर्जन दुकानों पर तोड़फोड़ ✻ स्टे को दरगुजर किया ✻ भाजपा ने मोर्चा संभाला

जयपुर, 25 मार्च (मसं)। हाईकोर्ट से हरी झंडी मिलने के बाद आज सवेरे चारदीवारी में दल-बल समेत घुसे डायनासोरों को छोटी चौपड़ पर जबर्दस्त विरोध के चलते कार्रवाई रोक बीच में ही वापस लौटना पड़ा। चतुर्भुज जी के मंदिर के नीचे खंदे में बैठे फल-सब्जी वालों के साथ आज बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मोर्चे पर डटे हुए थे और जैसे ही ‘डायनासोर’ चौपड़ पर पहुंचे माहौल गरमा गया और जबर्दस्त नारेबाजी शुरू हो गई। शहर भाजपा के समस्त प्रभावशाली नेता एवं कार्यकर्ता वहां एकजुट थे और सरकार विरोधी नारे लगा रहे थे। पूर्व मंत्री कालीचरण सर्राफ, राजपालसिंह शेखावत, महापौर निर्मला वर्मा, प्रतापसिंह खाचरियावास, पार्षद सुमन शर्मा, चन्दीराम राघानी, ओम स्वामी, विवेक कालिया, स्वाति परनामी, रमेश मून्दड़ा, संजय जैन, कुलवंत सिंह, शीला डोडिया, मंजू शर्मा, दुर्गासिंह, अशोक पाण्ड्या, अटल शर्मा सहित करीब पांच सौ से ज्यादा कार्यकर्ता वहां नारेबाजी कर रहे थे। माहौल बिगड़ता देखकर अधिकारियों ने आपरेशन पिंक की कार्रवाई बन्द करवा दी। फल-सब्जी वाले और भाजपा के कार्यकर्ता सरकार विरोधी नारे लगा रहे थे। निगम के एक अधिकारी द्वारा एक भाजपा कार्यकर्ता के साथ अभद्र व्यवहार करने से तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। भाजपा के नेता और कार्यकर्ता पुलिसकर्मियों से उलझ पड़े। बड़े पुलिस अधिकारियों ने बीच बचाव कर मामला शान्त किया।

25 मार्च, 2000

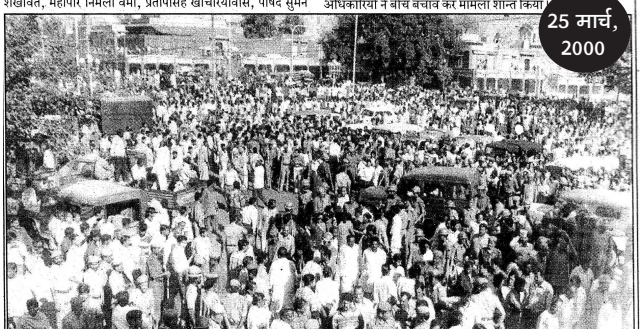

छोटी चौपड़ पर ऑपरेशन पिंक के दौरान उपस्थित जनसमूह

बड़ी चौपड़ पर ऑपरेशन पिंक के खिलाफ भाजपा का धरना

सिकरौरी गोलीकांड के पीड़ितों को सहायता

मृतक परिवारों को 5-5 लाख के मुआवजे का पत्र सौंपते हुए

मृतक परिवार को ढांढस बंधाते हुए

- भरतपुर जिले के सिकरौरी गांव में हुए मामूली विवाद के बाद बाहर के गांवों से आकर दबंगों ने ब्राह्मणों को लाइन में खड़ा करके गोलियां मारीं। इससे 2 युवकों की मौके पर मौत हो गई। 4 व्यक्ति गोली लगने से घायल हुए।
- दबंगों का आतंक इतना था कि कोई सांत्वना देने भी गांव तक जाने की स्थिति में नहीं था।
- जयपुर के कुछ सहयोगियों के साथ पहली बार गांव पहुंचकर वहां के पीड़ितों और जनता को एकजुट किया और भयमुक्ति का वातावरण पैदा हुआ।
- सरकार और प्रशासन का सहयोग लेकर मृतक परिवारों को 5-5 लाख रुपए और घायलों को 1-1 लाख रुपए का मुआवजा मंजूर करवाया।
- इस घटना के बाद जनता जागी और अपराधियों को सींखचों के अंदर जाना पड़ा। आम जनता में आत्मविश्वास लौटा और भरतपुर जिले में एकजुटता से न्याय मिलने की मिसाल कायम हुई।

सिकरौरी (भरतपुर) में युवक की हत्या के बाद थाने के सामने जमा हुए आक्रोशित समूह को संबोधित करते हुए

टोंक के पीड़ितों को न्याय, दौसा में राहत

रामजीलाल शर्मा की हत्या के बाद थाने पर रखे शव को शांतिपूर्वक हटवाकर दाह संस्कार करवाने और राज्य सरकार से मुआवजा दिलवाने में मध्यस्थता करने की भूमिका निभाई। टोंक के कलेक्टर एल.सी. असवाल के साथ पांच लाख रुपए का चैक मृतक की विधवा को सौंपा।

दौसा जिले के गरीब परिवार को बड़े अस्पताल द्वारा मरने को मजबूर करने और उस परिवार के व्यक्ति को अस्पताल से नहीं छोड़ने के मामले में सकारात्मक पहल से विषय का समाधान। दौसा जिले के लोगों ने इस घटना के बाद किया सम्मान। मंत्री-विधायक स्तर तक फरियाद भी न्याय नहीं दिलवा पाई।

निवाई (टोंक) में युवक की हत्या के बाद थाने के सामने जमा हुए आक्रोशित समूह को संबोधित करते हुए

विकट विप्लवी महावीर सिंह का स्मरण

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, लोकमान्य तिलक के पौत्र शैलेष तिलक, गोपाल शर्मा, शहीद भगत सिंह के भांजे जगमोहन सिंह और शहीद महावीर सिंह के पौत्र असीम राठौर

- अंडमान में शहीद क्रांतिकारी महावीर सिंह के शहादत दिवस पर जयपुर बोला 'भारत माता की जय'। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत सहित जयपुर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।
- 17 मई, 2013 को क्रांतिकारी महावीर सिंह के पौत्र श्री असीम सिंह राठौर के आवास से कारगिल शहीद कैप्टन अमित भारद्वाज के आवास तक रैली निकाली गई। इस रैली में नागरिक देशभक्ति से संबंधित नारे लिखी हुई पट्टियां लेकर चल रहे थे।
- प्रेस क्लब स्थित सभागार में देश के विभिन्न क्रांतिकारी परिवारों के सदस्यों ने एकत्रित होकर शहीद महावीर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की।
- क्रांतिवीर महावीर सिंह के पौत्र असीम राठौर, अमित भारद्वाज के पिता ओ.पी. शर्मा, तात्या टोपे के प्रपौत्र सुभाष टोपे, बाल गंगाधर तिलक के प्रपौत्र शैलेश तिलक, भगत सिंह के भांजे जगमोहन सिंह, चंद्रशेखर आजाद के सहदौहित्र गणेश शंकर मिश्र, सुखदेव के प्रपौत्र अनुज थापर, केसरीसिंह बारहठ की पौत्री राज्यलक्ष्मी साधना, अर्जुनलाल सेठी के पुत्र प्रकाश सेठी, उधम सिंह के परिवार से खुशीनंद सिंह, क्रांतिवीर दुर्गा सिंह के परिवार से विजयसिंह सिसोदिया, शहीद मेजर योगेश अग्रवाल के पिता अजय अग्रवाल, हिम्मत सिंह के पिता किशोर सिंह, शहीद अभय पारीक के पिता कल्याण सिंह पारीक का सम्मान किया गया।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पं. अर्जुनलाल सेठी, महावीर सिंह, सुखदेव, तात्यां टोपे, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, केसरीसिंह बारहठ, वीर उधम सिंह और शहीद दुर्गासिंह के परिजनों के साथ कारगिल के शहीद परिवार।

क्रांतिकारी परिवारों की सम्मान यात्रा

22 मार्च 2013 को राष्ट्रपति भवन में शहीद राजगुरु डाक टिकट लोकार्पण

- स्वातंत्र्य समर स्मृति संस्थान की स्थापना गोपाल शर्मा के संरक्षत्व में की गई। इससे पहले 22 मार्च, 2013 को राष्ट्रीय क्रांतिकारी परिवार संगठन का निर्माण शहीद राजगुरु की स्मृति में डाक टिकट लोकार्पण के अवसर पर नई दिल्ली में किया गया। क्रांतिकारी परिवारों ने सर्वसम्मति से गोपाल शर्मा को संयोजक, जगमोहन सिंह (अमर शहीद भगत सिंह के भांजे) को अध्यक्ष और वीर विनायक दामोदर सावरकर की पुत्रवधू हिमानी सावरकर को उपाध्यक्ष चुना।
- 23 मार्च, 2013 को लगभग 25 क्रांतिकारी परिवारों ने हुसैनीवाला जाकर अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल सहित उनके मंत्रिमंडल के अधिकांश सदस्य उपस्थित थे।
- क्रांतिकारी परिवारों की ओर से गोपाल शर्मा ने नई दिल्ली में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और हुसैनीवाला में प्रकाश सिंह बादल को ज्ञापन सौंपा।

मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल और मंत्रिमंडल के सदस्यों के समक्ष विचार प्रकट करते गोपाल शर्मा

फिरोजपुर में सम्मान करते प्रदेश भाजपा अध्यक्ष कमल शर्मा और अश्फाकउल्ला खान

पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल को ज्ञापन सौंपते हुए; साथ में राजगुरु के पौत्र सत्यशील राजगुरु, भगतसिंह के भतीजे जोरावर सिंह, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष कमल शर्मा, सुखदेव के पौत्र अनुज थापर, चंद्रशेखर आजाद के दौहित्र गणेशशंकर मिश्रा

जयपुर के स्वतंत्रता सेनानियों का अभिनंदन

राज्यपाल राम नाईक के साथ स्वतंत्रता सेनानी गोविंदनारायण खादीवाला, अमरनारायण माथुर, लक्ष्मीनारायण झरवाल और लक्ष्मीचंद बजाज

- स्वातन्त्र्य समर स्मृति संस्थान के तत्वावधान में भारत छोड़ो दिवस की स्मृति में चैम्बर ऑफ कॉमर्स भवन में जयपुर के सभी जीवित स्वतंत्रता सेनानियों का नागरिक अभिनंदन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री राम नाईक थे।
- इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मीनारायण बजाज, अमरनारायण माथुर, लक्ष्मीनारायण झरवाल, गोविंदनारायण खादीवाले और भंवरलाल खिलौनेवाले को साफा पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।
- अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के 84वें बलिदान दिवस पर जनपथ स्थित अमर जवान ज्योति पर स्वातंत्र्य समर की स्मृतियां फिर से ताजा हो गईं। स्वतंत्रता सेनानी सांवरलाल भारती, लक्ष्मीचंद बजाज, पं. रामकिशन का शॉल, माला एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। प्रसिद्ध क्रांतिकारी अर्जुनलाल सेठी के पुत्र प्रकाश सेठी, शहीद अमित भारद्वाज के पिता ओ.पी. शर्मा को सम्मानित किया गया। समारोह के अध्यक्ष के रूप में मां भारती के सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का सौभाग्य मिला।

पुलवामा हमले के खिलाफ आक्रोश

सर्वसमाज का प्रखर शंखनाद

महाशिवरात्रि, 2019 की पूर्व संध्या पर रामलीला मैदान में आयोजित सामाजिक समरसता सम्मेलन में हजारों नागरिकों की सहभागिता।

मातृशक्ति की विशाल कलश यात्रा, तिरंगा यात्रा, पुलवामा और जयपुर के सभी शहीद परिवारों का सम्मान, राष्ट्ररक्षा शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ, वेद पाठों की पवित्र ऋचाओं से वातावरण गुंजायमान।

प्रमुख क्रांतिकारी परिवारों के सदस्य, काशी विश्वनाथ मंदिर-जयपुर गोविंददेव मंदिर के महंतों सहित विभिन्न समाजों के गणमान्य नागरिक शामिल।

शहीद अमित भारद्वाज और शहीद योगेश अग्रवाल के पिताश्री का आशीर्वाद

शहीद अशफाकउल्ला खान के पौत्र के नेतृत्व में निकली तिरंगा यात्रा

झारखंड महादेव जी मंदिर से भव्य कलशयात्रा में शामिल महिला शक्ति

जयपुर के युवाओं ने गोपाल शर्मा का किया अभिनंदन

गोविंदोत्सव एक अनूठा आयोजन

शतायु संघ प्रचारक धनप्रकाश त्यागी और विज्ञापन जगत के पुरोधा रूपचंद माहेश्वरी का सम्मान करते हुए

शेखावाटी और ब्रज क्षेत्र की होली को जीवंत करते कलाकार

कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह

ढप-चंग-बांसुरी की जुगलबंदी में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की छटा

- स्टेच्यू सर्किल स्थित होटल रॉयल हवेली में 24 मार्च, 2019 को आयोजित गोविंदोत्सव में छोटीकाशी की धर्मपारायण जनता गोविंद के रंग में सराबोर हो गई। समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिष्ठित और आमजन ने फाल्गुनी गीतों पर फूलों की होली खेली।
- कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल एन.एल. टिबरेवाल रहे। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ अति विशिष्टजनों का सम्मान भी किया गया। इनमें गोविंद देवजी मंदिर के महंत अंजन कुमार गोस्वामी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक धनप्रकाश त्यागी, देवर्षि कलानाथ शास्त्री को राष्ट्र गौरव सम्मान प्रदान किया गया।
- भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. बी एल सोनी, विज्ञापन क्षेत्र की नामचीन हस्ती रूपचंद माहेश्वरी, आर्य समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी सत्यव्रत सामवेदी, ओलंपिक धावक गोपाल सैनी को राजस्थान गौरव से सम्मानित किया गया।

मंच पर विराजमान (बाएं से) गोपाल सैनी, सत्यव्रत सामवेदी, धनप्रकाश त्यागी, बी.एल. सोनी, एन.एल. टिबरेवाल, गोपाल शर्मा, महंत अंजन कुमार गोस्वामी, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, सुभाष गोयल, रूपचंद माहेश्वरी और ओ.पी. शर्मा

खोले के हनुमानजी मंदिर सौंदर्यीकरण

- खोले के हनुमानजी मंदिर सौंदर्यीकरण का श्रेय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को है। पुण्यात्मा राजमाता विजयाराजे सिंधिया को सच्ची श्रद्धांजलि ने उन्हें इस पवित्र कार्य के लिए प्रेरित किया। इस पर करीब 27 करोड़ रुपए की लागत आई।
- सौंदर्यीकरण योजना के समन्वयक के रूप में सरकार और मंदिर के बीच समन्वय और सहयोग की महती जिम्मेदारी निभाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
- विषय खोले के हनुमानजी मंदिर से जुड़ी चट्टान के नीचे से पानी के रिसाव से जुड़ा हुआ था। महंत राधेलालजी चौबे ने इसी विषय के समाधान के संदर्भ में प्रबंधक बाबूलाल मीणा को मिलने भेजा था। हनुमानजी महाराज की कृपा से मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे से 5 मिनट फोन पर हुई वार्ता ने जयपुर की धार्मिक प्रतिष्ठा को एक नए आयाम का सुअवसर दे दिया।

खोले के हनुमानजी मंदिर के सौंदर्यीकरण लोकार्पण अवसर पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, नगरीय विकास राज्यमंत्री प्रतापसिंह सिंघवी, सचिव ललित के. पंवार, विधायक बृजकिशोर शर्मा के साथ योजना समन्वयक के रूप में गोपाल शर्मा

महिला शक्ति का सम्मान

8 मार्च, 2019 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महानगर टाइम्स कार्यालय में नारी शक्ति का सम्मान

युगपुरुष स्मृति समारोह.. गांधीः जयपुर सत्याग्रह

जलियांवाला बाग बलिदान स्मृति शताब्दी समारोह पर परिजनों का अभिनंदन

गांधीः जयपुर सत्याग्रह पुस्तक का विमोचन करते (बाएं से) पद्मभूषण डी.आर. मेहता, गोपाल शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, मूर्धन्य साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य, वरिष्ठतम पत्रकार प्रवीणचंद्र छाबड़ा।

राजस्थान के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को मंचासीन अतिथियों ने उनके पास जाकर स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती और जलियांवाला बाग बलिदान की 100वीं बरसी पर बिड़ला सभागार में आयोजित युगपुरुष स्मृति समारोह में देश की आजादी की लड़ाई में शामिल हुए प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ ही जलियांवाला बाग के नरसंहार में शहीद हुए आंदोलनकारियों के परिजनों को सम्मानित किया गया।
- समारोह में 'गांधीः जयपुर सत्याग्रह' पुस्तक का विमोचन भी किया गया। पुस्तक के माध्यम से जयपुर से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के गहरे आत्मीय संबंधों और सत्याग्रह आंदोलन के अध्याय का रहस्योद्घाटन हुआ। समारोह में जयपुर के सभी स्कूल-कॉलेजों के श्रेष्ठतम छात्र प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

शतायु सेनानियों और शहीद परिवारों का सम्मान

माइकल ओ'डायर की हत्या कर जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लेने वाले अमर शहीद उधम सिंह के परिजनों को सम्मानित करते अतिथिगण

'गागर में सागर' कहावत को चरितार्थ करता कार्यक्रम : सी.पी. जोशी

मैं गोपाल शर्मा को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के दर्शन का अवसर दिया। 'गागर में सागर'...यह कहावत मैंने सुनी थी; लेकिन गागर में सागर कार्यक्रम कैसा होता है, यह मैंने पहली बार देखा। यह महात्मा गांधी की सार्ध शती का कार्यक्रम भी है, उनकी पुण्यतिथि का कार्यक्रम भी है, जलियांवाला बाग की शताब्दी का कार्यक्रम भी है और जयपुर सत्याग्रह के संबंध में गोपाल शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक के लोकार्पण का कार्यक्रम भी है।

गांधीजी का जो दर्शन था आज 70 साल की आजादी के बाद नई पीढ़ी के सामने उनकी चर्चा करने की बहुत आवश्यकता है। देश नीतियों के आधार पर आगे बढ़ता है। जब हम गांधी दर्शन की बात करते हैं तो हमें स्वराज, स्वावलंबन और स्वदेशी की बातें नौजवान पीढ़ी को बताने की आवश्यकता है। दुनिया में जो बदलाव हो रहा है, उस बदलाव को गांधीजी के संदर्भ में नई पीढ़ी को समझाने की आवश्यकता है। क्या आज देश में इस बात की जरूरत नहीं है कि हम स्वराज की कल्पना करें? संविधान में हमने नीति-निर्देशक सिद्धांतों में यह अवधारणा रखी थी कि स्वराज की कल्पना करेंगे और पंचायती राज को मजबूत करने का काम करेंगे। संविधान संशोधन हमने कर दिए, लेकिन स्वराज की जो कल्पना महात्मा गांधी के मन में थी, क्या उसे साकार करने की ओर बढ़ रहे हैं? यह एक बड़ा प्रश्न है।

स्वतंत्रता सेनानियों के संबंध में गोपाल शर्मा जो प्रयास कर रहे हैं, उनसे नई पीढ़ी बहुत प्रभावित होगी। मैं गोपाल शर्मा को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने अपनी पुस्तक के जरिए जयपुर से गांधीजी का संबंध जनता के सामने लाने का काम किया है। गोपाल शर्मा महानगर टाइम्स चलाने वाले एक पत्रकार मात्र नहीं हैं; उन्होंने एक सोच का काम किया है। मैं आशा करता हूं कि आने वाले समय में वे ऐसे कार्यक्रम करते रहेंगे और आने वाली पीढ़ी को प्रभावित करते रहेंगे। मैं एक बार फिर उन्हें इस बात के लिए भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने स्वतंत्र भारत में पैदा हुई हमारी पीढ़ी के लोगों को इस कार्यक्रम में बुलाया और स्वतंत्रता के नायकों के बीच उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया।

राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों को एक मंच पर पहली बार देखा : गुलाबचंद कटारिया

गोपाल शर्मा का बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने मुझ जैसे अदने को भी यहां बुलाकर इस कार्यक्रम में शामिल होने का मौका दिया। मैं जिंदगी में पहली बार किसी कार्यक्रम में राजस्थान के सभी स्वतंत्रता सेनानियों को एक साथ, एक निगाह से देख रहा हूं। इसके लिए भी मैं आपका बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। मैं सभी स्वतंत्रता सेनानियों का भी अभिनंदन करता हूं। इनके दर्शन मात्र से हममें भी कुछ करने की क्षमता पैदा होगी। यह महात्मा गांधी के जन्म का 150वां वर्ष है और आज उनकी पुण्यतिथि है। गोपाल शर्मा ने जिस तरह इस तारीख को चुना है, इस कार्यक्रम को जो रूप देने का प्रयास किया है और हम सब लोगों को इसमें सम्मिलित करने का प्रयास किया है, इसके लिए मैं उनका अभिनंदन और स्वागत करता हूं।

गोपाल शर्मा ने जो पुस्तक लिखी है, अभी उसका लोकार्पण होने वाला है। हमें तो पता ही नहीं था कि महात्मा गांधी जयपुर कब आए और जयपुर सत्याग्रह से उनका क्या संबंध है। गोपाल शर्मा ने अध्ययन और परिश्रम के आधार पर जयपुर और राजस्थान को उन महापुरुष से जोड़ने का प्रयत्न किया, इसके लिए मैं उनका बहुत अभिनंदन और स्वागत करता हूं। वे एक अखबार चलाने के साथ-साथ भारत की विशिष्टताओं को आने वाले पीढ़ियों तक पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह के कार्यक्रम से जो संदेश जाता है, जो भावना व्यक्त होती है, वह बड़ी महत्वपूर्ण होती है। विशेषकर जो आने वाली पीढ़ी है, जिसके भरोसे आगे यह देश चलेगा, उसमें भी इस प्रकार का संकल्प आए कि जीना है तो देश के लिए जीना है। इस बात का भाव रहे कि लोग पद से बड़े नहीं होते, बल्कि अपने समर्पण और त्याग के आधार पर बड़े होते हैं। इस देश ने राजा-महाराजाओं को नहीं पूजा है; यहां उन फकीरों की पूजा होती है, जो देश और धर्म के लिए कुछ कर जाते हैं।

गोपाल जी, मैं आपके विचार को, आपके काम को और आपकी इस सोच को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आपकी तरह और लोग प्रयत्न करें तो आने वाली पीढ़ी तक पुरानी पीढ़ी की विशिष्टताओं को पहुंचाते हुए उनके जीवन को अच्छा बनाया जा सकता है। भगवान आपको और ताकत दें।

वरिष्ठतम पत्रकारों का ऐतिहासिक सम्मान

महानगर टाइम्स द्वारा 10 जुलाई, 2022 को महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम, भारतीय विद्या भवन, विद्याश्रम में आयोजित वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह पत्रकारिता के पुरोधाओं के प्रति गुरु भावना, समर्पण, श्रद्धा और विनम्रता प्रकट करने का अभूतपूर्व अवसर बन गया। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र के सान्निध्य में आयोजित हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद और पूर्व केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने की। मुख्य अतिथि प्रदेश के शिक्षा एवं कला संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला और विशिष्ट अतिथि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मोहन प्रकाश रहे। सभी वरिष्ठ पत्रकारों को एक-एक लाख रुपए की सम्मान निधि और स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया गया।

प्रवीणचंद्र छाबड़ा: महात्मा गांधी पत्रकारिता सम्मान

विजय भंडारी: लोकमान्य तिलक पत्रकारिता सम्मान

मिलापचंद डंडिया: गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान

सीताराम झालानी: मदनमोहन मालवीय पत्रकारिता सम्मान

श्याम आचार्य (मरणोपरांत): बाबूराव विष्णु पराड़कर पत्रकारिता सम्मान

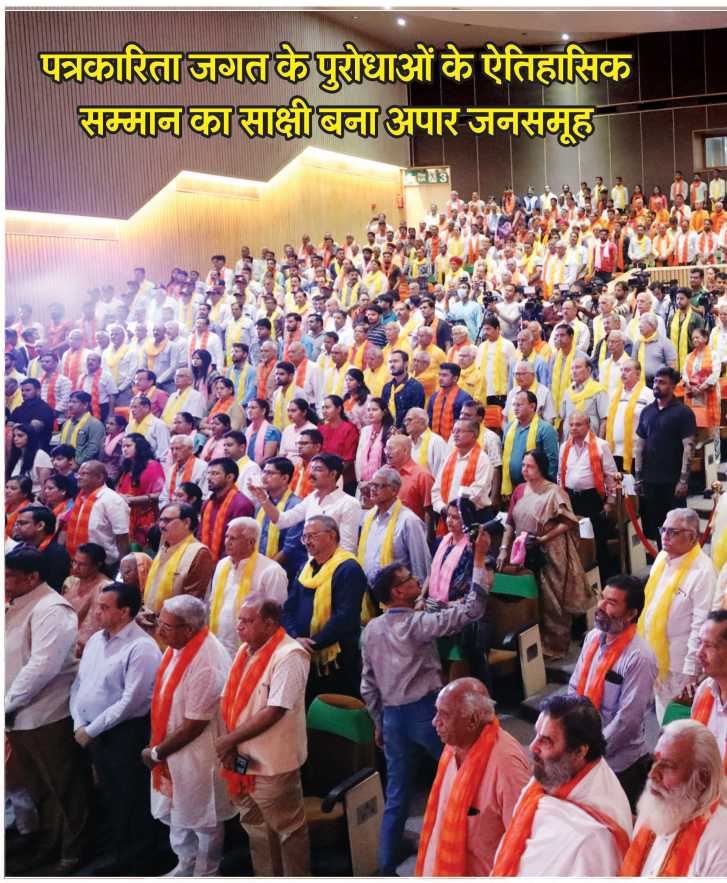
पत्रकारिता जगत के पुरोधाओं के ऐतिहासिक
सम्मान का साक्षी बना अपार जनसमूह

अद्भुत, अविस्मरणीय, अनुकरणीय

'महानगर टाइम्स की यह पहल सुखद'

गोपाल शर्मा से मेरा काफी पुराना संबंध रहा है। वे समय-समय पर विशिष्ट प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं। इनके द्वारा जब भी कोई आयोजन किया जाता है तो यह स्वयं में सुनिश्चित होता है कि वह एक सफल कार्यक्रम होगा। आज का यह अवसर इस रूप में अत्यंत सुखद है कि किसी समाचार पत्र ने अपनी ओर से पहल करके राजस्थान के पांच वरिष्ठतम पत्रकारों के अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें पत्रकारिता अलंकरण और एक-एक लाख रुपए की निधि भेंट करने का महत्वपूर्ण उपक्रम किया है। कर्तव्य, अधिकार, संविधान में दिए कानूनों की पालना करते हुए व्यक्ति कैसे जिम्मेदार नागरिक बने, इसकी सीख पत्रकारिता देती है। प्रेस की स्वतंत्रता जरूरी है, लेकिन स्वच्छंदता से बचना भी जरूरी है। इसके लिए स्वनिर्मित आचार संहिता होनी चाहिए। व्यावसायिक हितों पर आधारित पत्रकारिता नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह मिशन है और पत्रकारों को आम आदमी की आवाज बनना चाहिए। बाजारवाद के दौर में आदर्श मूल्य और नैतिकता का निवर्हन जरूरी है। पत्रकारिता जैसे कार्यक्षेत्र में दायित्व बोध और सजगता आवश्यक है। मूल्यों के साथ समझौता नहीं होना चाहिए।

- कलराज मिश्र, राज्यपाल, राजस्थान

'स्वागत योग्य कदम'

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

महानगर टाइम्स अखबार द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मान समारोह में प्रवीणचंद्र छाबड़ा, विजय भंडारी, मिलापचंद डंडिया, सीताराम झालानी एवं दिवंगत श्याम आचार्य को सम्मानित करने की पहल का मैं स्वागत करता हूं। इन सभी ने पत्रकारिता को पूरा जीवन समर्पित कर समाजसेवा में बड़ा योगदान दिया। मैं सम्मानित पत्रकारों एवं उनके परिजनों को बधाई देता हूं।

'नियमित हों ऐसे कार्यक्रम'

महानगर टाइम्स द्वारा आयोजित वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह एक सराहनीय पहल है। पत्रकारों की नई पीढ़ी को अपने क्षेत्र के अनुभवी व्यक्तित्वों का सान्निध्य और आशीर्वाद मिल सके, इसके लिए ऐसे कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में एक सैनिक खड़ा रहता है, वहीं कलम का सिपाही भी साथ होता है। इनका पथ भी कठिन और ये अपना जीवन देश के लिए जीते हैं। जब भी लोकतंत्र पर खतरा आया, मीडिया ने अपना धर्म निभाया। पत्रकारों और मीडिया संस्थानों को मजबूत करने की जरूरत है। उनके लिए आर्थिक मॉड्यूल तैयार करने की भी आवश्यकता है। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया से खबरें बहुत तेजी से पहुंचती हैं, लेकिन, इसमें कई बार गलत तथ्य भी चले जाते हैं। विश्वसनीयता के लिए आज भी अगले दिन अखबार पढ़ा जाता है।

– कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सांसद

'आजादी में पत्रकारिता का योगदान'

आजादी दिलाने और देश के नवनिर्माण में पत्रकारिता का बड़ा योगदान है। वरिष्ठतम पत्रकार प्रवीण चंद्र छाबड़ा जैसे पत्रकार अंहिसा और शांति में विश्वास करते थे और सभी से अच्छे संबंध होने के बावजूद उसका दुरुपयोग नहीं किया। विजय भंडारी के लिए सच्चाई से बड़ा कोई धर्म नहीं है। सादा जीवन और उच्च विचार उनकी पहचान है। मिलापचंद डंडिया की पहचान खोजपूर्ण पत्रकारिता के क्षेत्र में रही है। उन्हें भारत का एंडरसन कह सकते हैं। सीताराम झालानी और श्याम आचार्य की जोड़ी थी। सीताराम झालानी एनसाइक्लोपीडिया हैं। इनका सम्मान करना गौरव की बात है। भारत की संस्कृति में भी बड़ों के सम्मान पर जोर दिया जाता है। बड़ों के सम्मान से धन, आयु, बुद्धि और समृद्धि बढ़ती है। आजादी की रक्षा के लिए हम सब को मिलकर रहना होगा। तेरा-मेरा करना भारत की संस्कृति नहीं है और पूरी दुनिया हमारे लिए एक कुटुम्ब है।

– डॉ. बी.डी. कल्ला, शिक्षा, कला एवं संस्कृति मंत्री

'समाज का दीपक है पत्रकार'

पत्रकार समाज के लिए दीपक की तरह है। उसकी रोशनी से समाज आगे बढ़ता है। आज सोशल मीडिया अनसोशल हो गया है। इस वजह से प्रिंट मीडिया का महत्व बरकरार है और ये कभी खत्म नहीं होगा। सोशल मीडिया की खबर पर एकदम विश्वास नहीं किया जा सकता है, इसलिए लोग सुबह अखबार में छपी खबर पर ही विश्वास करते हैं। मूल्यों पर आधारित पत्रकारिता लोकतंत्र के लिए जरूरी है। अखबार निकालना हिम्मत का काम है। एक साधारण और सक्रिय पत्रकार अखबार का मालिक हो सकता है, महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक गोपाल शर्मा इसकी मिसाल हैं। यह मात्र पांच पत्रकारों का सम्मान समारोह नहीं है बल्कि देश के पत्रकारों का सम्मान है। जो पीढ़ी बुजुर्गों को सम्मान नहीं देती, उसकी अगली पीढ़ी उसका सम्मान नहीं करती है। ऐसे में महानगर टाइम्स की यह पहल सराहनीय है।

– मोहन प्रकाश, पूर्व कांग्रेस राष्ट्रीय महासचिव

स्वराज-75 में सक्रियता

15 अगस्त, 2022 को आजादी के अमृत महोत्सव पर जयपुर में आयोजित ऐतिहासिक 'स्वराज 75' समारोह में संयोजक की भूमिका

- देश के पहले सीडीएस रहे जनरल बिपिन रावत (शहीदोपरांत), पाकिस्तान पर सर्जिकल एयर स्ट्राइक के हीरो ग्रुप कैप्टन अभिनंदन वर्थमान और तीनों जीवित परमवीर चक्र विजेताओं कैप्टन बाना सिंह, कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव और सूबेदार मेजर संजय कुमार को अमृत अलंकरण से सम्मानित किया गया और पांचों महावीरों को 5-5 लाख रुपए की सम्मान निधि भेंट की गई।

- महान स्वतंत्रता सेनानियों महारानी लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे, तात्या टोपे, बिरसा मुंडा, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी, रामकृष्ण खत्री, शचींद्रनाथ बक्शी, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विनायक दामोदर सावरकर, महावीर सिंह, बालाजी रायपुरकर, उधम सिंह, अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, ठाकुर कुशल सिंह, गोविंद गुरु, दुर्गा सिंह के वंशजों और जलियांवाला बाग नरसंहार के शहीदों के परिजनों सहित राजस्थान से जुड़े परमवीर चक्र विजेताओं, पुलवामा शहीदों के परिजनों और प्रदेश के वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानियों को अमृत महोत्सव सम्मान से सम्मानित किया गया।

तीनों परमवीर चक्र विजेता पहली बार एक साथ किसी सार्वजनिक मंच पर उपस्थित हुए।

अभिनंदन वर्थमान को सम्मानित करते राज्यपाल कलराज मिश्र और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत।

शहीद जनरल बिपिन रावत का सम्मान उनकी पुत्री कृतिका रावत ने सम्मान ग्रहण किया।

मंचासीन क्रांतिकारी-शहीद परिवार और देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति से जनसमूह को भाव-विभोर करती बाल कलाकार मंडली

पद्मश्री कैलाश खेर के सुरों से बही गंगा

राष्ट्र के लिए एकजुटता की अभूतपूर्व मिसाल

भारत अमृत महोत्सव समिति के संयोजक गोपाल शर्मा के सान्निध्य में आयोजित बैठक में पहली बार जयपुर नगर निगम ग्रेटर और हेरिटेज के दोनों महापौर, उपमहापौर और कांग्रेस-भाजपा के लगभग सभी पार्षद एक मंच पर आए और स्वराज-75 को सफल बनाने का संकल्प लिया। दो नगर निगम बनने के बाद से यह पहला मौका था, जब दोनों निगमों के प्रतिनिधि किसी लक्ष्य के लिए एकजुट नजर आए।

जयपुर के जन-जन में उमड़ा जोश

महानगर में मंगल

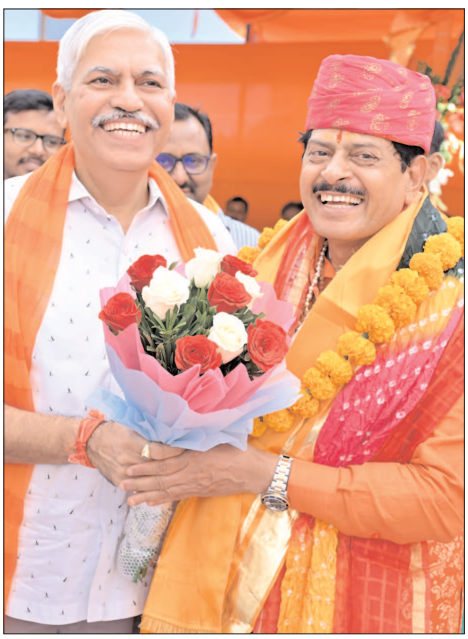

चुनौतियों भरा सफर

23 नवम्बर, 1997 को जयपुर के बिड़ला सभागार में महानगर टाइम्स की बुनियाद रखी गई। लोकार्पण समारोह में तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष पी.ए. संगमा, मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत, देश के ख्यातनाम पत्रकार प्रभाष जोशी, विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अशोक गहलोत और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष रघुवीर सिंह कौशल मंचासीन अतिथि थे। बिना किसी धन-संपत्ति या आश्वासन के समाचार पत्र की शुरुआत करने जा रहे संस्थापक गोपाल शर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि देव-दुर्लभ साथियों के सहयोग और समर्पण भाव से पत्रकारिता क्षेत्र में नया अध्याय रचने का प्रयास करेंगे। मुख्यमंत्री शेखावत ने कम पूंजी को लेकर चिंता जताई। संगमा ने भी एक समाचार पत्र शुरू करने में आए व्यवधान के बारे में बताया। प्रभाष जोशी का कहना था कि उन्होंने कई बार ऐसा प्रयास किया, लेकिन सफल नहीं हो सके। इस तरह के माहौल के बीच राज्य के पहले 'टेबुलाइड' समाचार पत्र के रूप में महानगर टाइम्स की शुरुआत हुई। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल की माताजी की बरसी में शामिल होने के कारण कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके अटलबिहारी वाजपेयी, देश के विद्वान राजनीतिज्ञ डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर, राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचंद कुलिश और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शीर्ष कार्यकर्ता दादाभाई गिरिराज शास्त्री जैसे मूर्धन्य व्यक्तियों का भरपूर आशीर्वाद

महानगर टाइम्स पढ़ते श्वेताम्बर तेरापंथ के दसवें यशस्वी आचार्य महाप्रज्ञ।

अखबार के साथ था। लीक से हटकर कुछ नया करने के पत्रकार साथियों के जुनून और अखबार के अन्य सहयोगी स्टाफ ने बिना अपने भविष्य की चिंता किए राजस्थान पत्रिका और दैनिक भास्कर जैसे स्थापित मीडिया संस्थानों को छोड़कर महानगर टाइम्स को नई ऊंचाइयां देने के लिए खुद को पूर्ण मनोयोग से समर्पित कर दिया।

महानगर ने सिर्फ दो सिद्धांत रखे.. किसी से झुकेंगे नहीं और समाचार पत्र के कार्यालय में आने वाले किसी भी दुखी-पीड़ित को निराश नहीं लौटने देंगे। अखबार शुरू होने के महज 22 दिन बाद ही शास्त्री नगर कब्रिस्तान खाली करवाने को लेकर 15 दिसम्बर, 1997 को हुए गोलीकांड में 6 मुस्लिमों की मौत की घटना पहली चुनौती के रूप में सामने आई। तीन दिन तक कड़ाके की सर्दी के बीच महानगर रिपोर्टर्स के तथ्यात्मक और सटीक कवरेज ने बड़े समाचार पत्र समूहों को सोचने पर विवश कर दिया। आलम यह था कि कर्फ्यू के सन्नाटे के बीच रात 1.30 बजे जब एक समाचार पत्र के प्रबंधन से जुड़े वरिष्ठ अधिकारी मौके पर आए तो उनका कोई प्रतिनिधि वहां नहीं था, लेकिन 'महानगर' के जुझारू संवाददाता और फोटोग्राफर ने उन्हें घटना के तथ्यात्मक विवरण से अवगत करवाया। जिस समय आतंकवादी संगठनों का विवरण समाचार पत्रों की प्रमुख खबरों का हिस्सा नहीं

हुआ करता था, 'स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया' (सिमी) के रामगंज स्थित कार्यालय का खुलासा करके महानगर ने सजग प्रहरी की भूमिका का निर्वहन किया। आगे चलकर इस संगठन पर प्रतिबंध लगने के बाद यह इंडियन मुजाहिदीन (आईएम) के परिवर्तित रूप में सामने आया। इसी तरह, जयपुर के लिए गंभीर चुनौती बन चुके बांग्लादेशी घुसपैठियों की राष्ट्र विरोधी आपराधिक गतिविधियों से पुलिस-प्रशासन को जागरूक करने के लिए महानगर ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। लगातार दो-तीन साल तक समाचारों की सीरीज चलाकर रेलवे स्टेशन के करीब गोपालबाड़ी कालवाड़ स्कीम की करोड़ों रुपए की सरकारी भूमि पर कब्जा जमाए बैठे घुसपैठियों को बेदखल करवाने में महानगर ने एक बार फिर से अपने राष्ट्रीय दृष्टिकोण को पुष्ट किया। इसी क्रम में अंतरराष्ट्रीय आतंककारी और बम बनाने में महारत रखने वाले अब्दुल करीम टुंडा के बारे में सर्वप्रथम महानगर ने रहस्योद्घाटन किया। आगे चलकर इस कुख्यात आतंकवादी के विदेश में पकड़े जाने के बाद देश-दुनिया को उसके घातक मंसूबों का पता चल पाया। उसके बारे में विभिन्न टीवी चैनल्स और समाचार पत्रों ने तथ्यात्मक जानकारी महानगर कार्यालय से जुटाई।

24 मार्च, 1999 को जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में भारत-पाक के बीच क्रिकेट मैच होने जा रहा था। इसके लिए स्टेडियम की क्षमता से 16 हजार अधिक टिकट छपवाए जाने और इससे किसी बड़ी अनहोनी की आशंका का समाचार महानगर ने 20 मार्च को ही प्रकाशित कर दिया। इस पर विधानसभा

23 अक्टूबर, 2003: उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत अपने जन्मदिन पर महानगर टाइम्स कार्यालय में गोपाल शर्मा को आशीर्वाद देते।

में विशेषाधिकार हनन की कार्यवाही का भय दिखाया गया। तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष परसराम मदेरणा के सामने संबंधित मंत्री और गोपाल शर्मा ने अपने पक्ष रखे। माननीय अध्यक्ष ने समाचार पत्र की सजगता की तारीफ करके मंत्री को अधिकारियों द्वारा दिए गए गलत तथ्यों को लेकर कार्रवाई करने का निर्णय सुनाया।

जयपुर में तिब्बती लड़की के साथ हुई बलात्कार की घटना पर गोपाल शर्मा के 'भूल जाओ ऐ तिब्बती लड़की' शीर्षक से लिखे गए संपादकीय ने किंकर्तव्यविमूढ़ पुलिस को जहां इस शर्मनाक कृत्य के लिए अपराध बोध करवाया; वहीं, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की सख्त पहल पर अगले दिन अपराधी गिरफ्तार किए गए। इसी तरह एक कथित पत्रकार द्वारा दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने के बाद राज्य सरकार के एक मंत्री द्वारा आरोपी को बचाए जाने के लिए अपने साथी विधि मंत्री को मुकदमा वापस लेने के लिए सिफारिशी पत्र लिखने जैसे शर्मनाक कृत्य का महानगर ने भंडाफोड़ किया। तब जाकर मुख्यमंत्री स्तर पर आगे की प्रस्तावित कार्यवाही को मुल्तवी किया गया और आरोपी को अपने किए की सजा भुगतनी पड़ी। ऐसे ही, राज्य सरकार के कुछ मंत्रियों द्वारा एक बाहुबली से रिश्वत लिए जाने के तथ्यात्मक प्रमाण सामने आने के बाद जब स्वयं को प्रभावी पत्रकारिता का पैरोकार मानने वाले समाचार पत्रों ने चुप्पी साध ली, तब महानगर ने परिणाम की चिंता किए बिना अपनी आवाज बुलंद की।

सामाजिक सरोकारों को सदैव वरीयता देने वाले महानगर ने साल 2000 में शुरू किए गए 'ऑपरेशन पिंक' के दौरान सरकार से सीधी टक्कर लेकर कलम की ताकत का अहसास करवाया। उस वक्त जब बड़े समाचार पत्रों में बुलडोलरों को माला पहनाने की फोटो छप रही थी, महानगर इसके विरोध

में मुखर रूप से सामने आया। अखबार के सभी साथियों की आपात बैठक करके गोपाल शर्मा ने निर्देशित किया कि सरकार के अन्यायपूर्ण और भेदभाव पर आधारित तुगलकी अभियान का डटकर प्रतिकार करना है। उसी दौरान पत्रकार विमलेश शर्मा ने ऑपरेशन पिंक में उजाड़े गए सोडाला के एक डेयरी बूथ संचालक के आत्महत्या कर लेने की जानकारी दी और महानगर के संवाददाता पूरे शहर में कटिबद्ध होकर सक्रिय हो गए। गोपाल शर्मा के संपादकीय 'आंखें खोलिए गहलोत साहब' ने ऑपरेशन की अगुवाई कर रहे अफसरों को पैर पीछे खींचने पर विवश कर दिया। अखबार की सजग प्रहरी की भूमिका के बाद जयपुर की जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी और लोगों में भरे आक्रोश को सरकार नजरअंदाज नहीं कर सकी। महानगर की इस भूमिका ने शहर के सभी सामाजिक, स्वयंसेवी संगठनों और राजनीतिक दलों को इतना संगठित कर दिया कि सरकारी डायनासोर फिर कभी किसी गरीब मजलूम का आशियाना नहीं उजाड़ पाए।

पाकिस्तानी सेना और घुसपैठियों के साथ कारगिल में हुए युद्ध के दौरान महानगर एक अलग भूमिका में नजर आया। देश के लिए सर्वोच्च बलिदान करने वाले अमर शहीदों की स्मृतियों को अक्षुण्ण रखने के लिए महानगर ने जयपुर के प्रमुख नागरिकों के साथ अभियान चलाया। कारगिल शहीदों के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग से समर्पण निधि एकत्रित की गई। 30 अप्रेल, 2000 को बिड़ला सभागार में महानगर टाइम्स की ओर से आयोजित 'कारगिल शहीद समर्पण समारोह' एक ऐसा अनूठा एवं अद्वितीय आयोजन बन गया, जिसमें हर जयपुरवासी ने खुद शहीद परिवारों के गर्व की अनुभूति महसूस की। तत्कालीन रक्षा मंत्री जसवंत सिंह, राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, नेता प्रतिपक्ष भैरोंसिंह शेखावत, केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, राज्य सैनिक कल्याण मंत्री डॉ. चंद्रभान की उपस्थिति में राजस्थान के सभी 71 शहीद परिवारों को 51-51 हजार की एफ.डी. समर्पित की गई। दुधमुंहे बच्चों को लेकर जब वीरांगनाएं सम्मान ग्रहण करने पहुंचीं तो जनसमूह करीब दो घंटे तक तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन करता रहा।

उसी दौरान कारगिल में सैकड़ों भारतीय जवानों की शहादत के गुनहगार पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ की जयपुर यात्रा पर जब सरकार स्वागत में पलक पांवड़े बिछाए हुए थी, तब भी महानगर ने राष्ट्रधर्म को वरीयता दी। गोपाल शर्मा ने आक्रोश भरा संपादकीय 'मुशर्रफ मुर्दाबाद' लिखकर शेष संपादकीय कॉलम को खाली छोड़कर अपने पत्रकारिता धर्म का निर्वहन करते हुए विरोध दर्ज करवाया। महानगर के आह्वान पर जयपुर आधे दिन तक बंद रहा।

आपदा पीड़ितों को संबल देने में महानगर ने अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया। गुजरात में 2001 में आए महाविनाशकारी भूकंप के दौरान जयपुर के प्रमुख समाजसेवियों, व्यापारिक संगठनों के नेताओं और चिकित्सकों की टीम को साथ लेकर राहत सामग्री जुटाई गई। 18 ट्रकों में उपभोग की सामग्री एकत्रित की गई; इनमें से 11 ट्रकों को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रामनिवास बाग से रवाना किया, 7 ट्रकों में भरी राहत सामग्री को पीड़ितों तक भेजने के लिए महानगर के मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया स्थित कार्यालय पर राज्यपाल अंशुमान सिंह आए। जिस समय गुजरात में जबर्दस्त भूकंप से धरती थरथरा रही थी, ऐसे समय में महानगर की पहल पर जयपुर के जांबाजों ने अपनी जान पर खेलकर न

केवल कैंप लगाकर राहत सामग्री का वितरण किया बल्कि मलबे में दफन हुईं लाशें तक बाहर निकालकर मानवीयता का परिचय दिया।

सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया में 2009 में आईओसी के तेल गोदाम में लगी भीषण आग ऐसी ही बड़ी दुर्घटना थी। उस दिन मौत सामने खड़ी थी और कई किलोमीटर का इलाका खाली करवाया हुआ था। जिला कलेक्टर और पुलिस के तमाम आला अधिकारी किसी को भी घटनास्थल की ओर नहीं जाने दे रहे थे। ऐसी भीषणतम परिस्थिति में महानगर के रिपोर्टर विकास शर्मा और संदीप देशपांडे मौके पर खबर के लिए जूझ रहे थे। आग का एक गोला विकास शर्मा के ठीक पास आकर गिरा, लेकिन देवयोग से कोई अनहोनी नहीं हुई।

'किससे करें गुहार' शीर्षक से प्रकाशित खबरों से सैकड़ों दीन-दुखियों को संबल देने में महानगर सदैव अग्रणी रहा। ट्रेन से आ रहे बारां जिले के किशनगंज इलाके के सहरिया आदिवासी परिवार के एक मजदूर के शव को जयपुर से करीब 700 किमी दूर पहुंचाने की व्यवस्था के लिए पीड़ित परिजनों ने महानगर कार्यालय में संपर्क किया। ऐसे में मानवीय धर्म निभाते हुए शव को एंबुलेंस के जरिए गंतव्य तक पहुंचाया गया। इसी तरह सरपंच चुनाव में उपजी रंजिश के चलते एक गरीब मजदूर की हत्या के बाद शव को रेल पटरी पर रखकर उसे आत्महत्या का रूप देने के मामले में स्थानीय पुलिस से लेकर एएसपी तक की जांच में उसे आत्महत्या ही बताया गया। लेकिन जब मृतक की बेवा और छोटे बच्चों ने महानगर आकर अपनी पीड़ा बताई तो घटनास्थल पर जाकर उसकी गंभीरता से पड़ताल की गई। विषय का छिद्रान्वेषण करने के बाद जब तथ्य सामने आए तो आला अधिकारी भी दंग रह गए। आखिरकार दोषी दबंग व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया और उसे गिरफ्तार भी करना पड़ा। दुष्कर्म के मामले को उजागर करने के कारण एक राज्य मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा।

समय की पदचाप पहचानते हुए भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के सटीक पूर्वानुमान महानगर को अन्य समाचार पत्रों से अलग पायदान पर खड़ा करते हैं। जिस समय नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरकर आने की बात आम चर्चा में नहीं थी, उस दौरान महानगर ने 2002 में लिखा कि भाजपा की राजनीति मोदी के नेतृत्व में करवट ले रही है। गोधरा नरसंहार की पहली खबर महानगर में छपी। 2001 में मनमोहन सिंह के आगामी प्रधानमंत्री उम्मीदवार बनने संबंधी आकलन, 2004 में सोनिया गांधी की प्रधानमंत्री बनने को लेकर असमंजस की स्थिति, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे कल्याण सिंह द्वारा भाजपा छोड़कर क्षेत्रीय दल बनाने, अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप के उभरकर आने, नितिन गडकरी के भाजपा अध्यक्ष बनने जैसे कितने ही आश्चर्यचकित करने वाले आकलन और विश्लेषण खरे साबित हुए। 1998 से 2018 तक के राजस्थान विधानसभा चुनावों को लेकर किए गए आकलन हमेशा सटीक रहे।

देश के क्रांतिकारी परिवारों को पहली बार जयपुर में बुलाकर अभिनंदन, कारगिल-पुलवामा के शहीद परिवारों का सम्मान, महात्मा गांधी की डेढ़ सौवीं जयंती, जलियांवाला बाग नरसंहार के शताब्दी वर्ष पर आयोजन.. महानगर विश्व में एकमात्र ऐसा समाचार पत्र रहा, जिसने विस्मृत कर दिए गए राष्ट्र के गौरवों को आदरपूर्ण सम्मान प्रदान किया। प्रभु की कृपा से खोले के हनुमानजी मंदिर के नव स्वरूप में महानगर टाइम्स की गिलहरी भूमिका भी रही। गोपाल शर्मा ही सरकार और मंदिर प्रशासन के बीच समन्वयक रहे। यह विषय उन्होंने ही

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

'महानगर टाइम्स' के पच्चीसवें स्थापना दिवस की शुभकामनाएं। समाज को निरंतर जागरुक करने में समाचार पत्र की अब तक की यात्रा सराहनीय है।

भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस व संघर्ष की गाथाओं और राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है। देश, दुनिया व समाज से जुड़े विभिन्न विषयों की विस्तृत जानकारी को जनता तक पहुंचाने में समाचार पत्रों का विशेष महत्व है।

पिछले कुछ वर्षों में जन-जागरुकता और जन-भागीदारी से जुड़े अभियानों को मीडिया ने अपने प्रयासों से उल्लेखनीय मजबूती दी है। जन सरोकार से जुड़े मुद्दों, सामान्य जन के उद्यम और उपलब्धियों से लेकर देश की सतत् विकास यात्रा को प्रभावी रूप में जन-जन तक ले जाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह देखना सुखद है कि 'महानगर टाइम्स' पत्रकारिता की श्रेष्ठ परंपरा को आगे ले जाने का कार्य कर रहा है।

जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तो एक प्रकार से संस्थान के लिए भी यह अवसर और यादगार हो गया है। आशा है कि 'महानगर टाइम्स' अपनी रजत जयंती यात्रा से प्रेरणा लेते हुए देश व समाज की बेहतरी के लिए समर्पित प्रयास करता रहेगा।

'महानगर टाइम्स' के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों और पाठकों को बधाई व हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
अग्रहायण 01, शक संवत् 1943
22 नवंबर, 2021

तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के समक्ष रखा, जिसकी उन्होंने तत्क्षण स्वीकृति दी। जयपुर में 'राजपथ' के स्थान पर 'जनपथ' का नामकरण भी महानगर की प्रेरणा है। 24 मार्च, 2019 को स्टेच्यू सर्किल स्थित होटल रॉयल हवेली में महानगर द्वारा आयोजित किए गए 'गोविंदोत्सव' में छोटी काशी की धर्मपरायण जनता अपने आराध्य देव के रंग में सराबोर नजर आई।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि आज देश का नेतृत्व संभाल रहे नरेन्द्र मोदी, पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत, जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व राज्यपाल अंशुमान सिंह जैसे लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तित्व महानगर के लालकोठी और मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया स्थित कार्यालय के पुराने भवनों की साधारण-सी कुर्सियों पर बैठ चुके हैं। वह काफी संघर्षपूर्ण दौर रहा। घने जंगल और गहरे नाले के समीप कार्यालय में काम करते समय सांप-गोहरे आना आम बात थी। एकाधिक बार झालाना अभ्यारण्य से बाहर निकलकर बघेरों तक के अंदर आ जाने की घटनाओं से स्थिति को समझा जा सकता है। इन हालात के बीच एक प्रभावी समाचार पत्र ने महानगर की टीम को तोड़ने के लिए मोटे प्रलोभन दिए गए, लेकिन महानगर की निरंतरता पर कोई असर नहीं पड़ा। एक अन्य प्रमुख समाचार पत्र ने सांध्यकालीन दैनिक निकालने की योजना बनाई, लेकिन विचार त्याग देना पड़ा।

पत्रकारिता के बदलते दौर में संपादक गोपाल शर्मा के आत्मज जिज्ञासु शर्मा सिम्बायोसिस, पुणे से एमबीए करके और ऐश्वर्य शर्मा ब्रिटेन से प्रबंधन में मास्टर डिग्री करके महानगर टाइम्स से जुड़े। अपनी कार्यकुशलता और आधुनिक सोच से दोनों ने अखबार को नया स्वरूप और दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसी दौरान सांध्यकालीन दैनिक के रूप में 17 साल की यात्रा पूरी करके 25 सितम्बर, 2014 से महानगर टाइम्स प्रातःकालीन स्वरूप में सामने आया। नए कलेवर और नए अंदाज में सहकार मार्ग पर नए भवन में काम आगे बढ़ा, लेकिन संकल्प और मिशन वही रहा।

विनोद चतुर्वेदी
(लेखक महानगर टाइम्स के समाचार संपादक हैं।)

महान संतों का सान्निध्य-आशीर्वचन

गोवर्धनमठ पुरी पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती जी

जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती जी और मुख्य सचिव डी.बी. गुप्ता

श्री श्री रविशंकर जी के साथ समारोह की अध्यक्षता करते हुए

महानगर टाइम्स कार्यालय में साध्वी ऋतंभरा जी का पदार्पण और आशीर्वचन..
साथ में ललितकिशोर चतुर्वेदी, मानिकचंद सुराणा, पी.एल. चतुर्वेदी

गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पंड्या जी का आशीर्वाद हमेशा साथ

रेवासा धाम अग्रपीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य जी का सतत सान्निध्य

खोले के हनुमानजी मंदिर में दशम वर्षगांठ

माला पहनाकर बधाई और आशीर्वाद देते पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत।

राज्यपाल अंशुमान सिंह, वन एवं पर्यावरण मंत्री लक्ष्मीनारायण दवे, राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष मानिकचंद सुराणा और यातायात मंत्री यूनुस खान

मन की बात : प्रख्यात ज्योतिषी पं. केदार शर्मा, शिक्षा मंत्री घनश्याम तिवाड़ी, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भंवरलाल शर्मा और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी

आत्मीय पल : मोहनदास अग्रवाल, अरुण अग्रवाल, भगवानसिंह रोलसाहबसर और राजाराम मील

राज्यसभा सांसद पद्मभूषण नारायणसिंह माणकलाव की शुभकामना

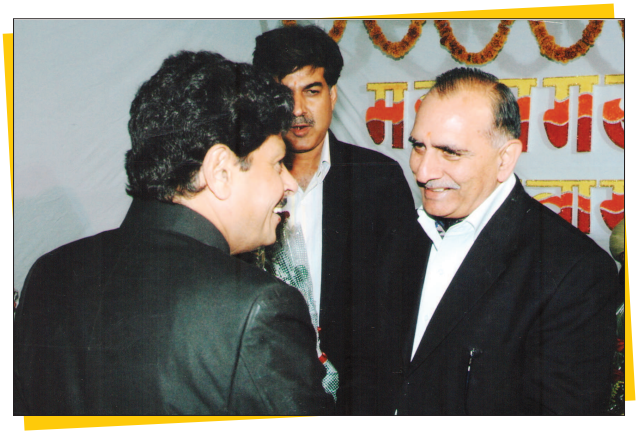

जयपुर नगर निगम महापौर अशोक परनामी और
नगरीय विकास मंत्री राजपालसिंह शेखावत के साथ

जयपुर के व्यवसाय जगत के शीर्ष व्यक्तित्व :
अमित अग्रवाल, जसवंत मील, दिलीप बैद, अनिल लोढ़ा

आईएएस जगदीश चंद्रा और वरिष्ठ पत्रकार बी.एम. शर्मा का सान्निध्य

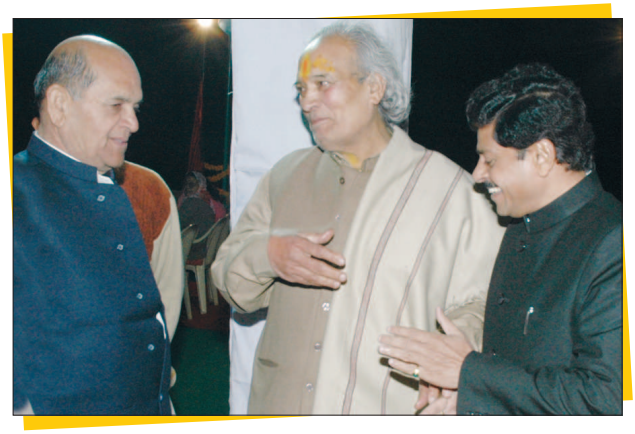

अलबेली शरण जी महाराज और पं. नंदलाल शर्मा का आशीर्वाद

भैरोंसिंह शेखावत और अंशुमान सिंह से मुलाकात करते
जयपुर के शीर्ष व्यवसायी आत्माराम गुप्ता

राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष अजयपाल सिंह, जयपुर के
प्रमुख चिकित्सक डॉ. एस.एस. अग्रवाल और व्यवसायी आनंद महरवाल

लोकरक्षक का प्रतीक

गुलाब बत्रा

पत्रकारिता को मिशन की तरह जीने वाले गोपाल शर्मा का अभिनव प्रयोग 'महानगर टाइम्स' 25 वर्षों की यात्रा पूरी कर चुका है। यह एक ऐसे सफर का सुखद पड़ाव है, जिसकी शुरुआत सिर्फ विश्वास और जुनून के बलबूते हुई थी; न कोई पूंजी, न कोई आश्वासन और न ही किसी अनुचित सहयोग की अपेक्षा। इन हालात के बावजूद यह लंबा सफर तय करना और समाचार-पत्रों की जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा के बीच अपनी विशेष पहचान बनाना किसी सपने जैसा लग सकता है... लेकिन यह एक सच्ची कहानी है।

गोपाल शर्मा ने सरस्वती के आराधक के रूप में पत्रकारिता को जीया है। राष्ट्रीय स्तर पर दीर्घकालीन प्रभाव डालने वाले और इतिहास की धारा बदलने वाले विभिन्न घटनाक्रम की रिपोर्टिंग से उन्होंने ख्याति अर्जित की। लगभग डेढ़ दशक तक निर्भीक रिपोर्टर की भूमिका के बाद उन्होंने प्रबुद्ध संस्थापक-संपादक का स्वरूप अपनाते हुए 23 नवम्बर, 1997 को सांध्यकालीन टेबुलाइड समाचार पत्र 'जयपुर महानगर टाइम्स' का प्रकाशन शुरू किया। दृढ़ आत्मविश्वास, सैद्धांतिक निष्ठा और देव-दुर्लभ सहयोगियों को ही उन्होंने पूंजी बनाया। मिशन पत्रकारिता के लिए पूर्ण समर्पित जुनूनी टीम को कंधे से कंधा मिलाकर व्यापक जनहित में पत्रकारिता धर्म के मार्ग पर चलने को प्रेरित किया। इसका प्रतिफल महानगर शुरू होने के तीसरे सप्ताह में सामने आ गया, जब पुलिस गोलीकांड में एक समुदाय के छह लोगों की मौत और कर्फ्यू की विषम परिस्थिति में महानगर टाइम्स की जुझारू टीम ने तथ्यात्मक कवरेज से जनता और प्रशासन को जागरूक करने का धर्म निभाया।

सटीक कवरेज, सूक्ष्म विश्लेषण और धारदार संपादकीय के कारण महानगर टाइम्स की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। सुबह के समाचार पत्र पढ़ने की अभ्यस्त रही जनता दोपहर बाद की ताजातरीन खबरों के लिए 'महानगर' की बाट जोहने लगी। गुलाबी नगर के बाशिंदे तीसरे पहर इस अखबार को देखते ही नए समाचार जानने के लिए टूट पड़ते। साल दर साल और दिन-प्रतिदिन इस छोटे से लगने वाले अखबार ने कई मर्तबा अपनी खोजपरक रिपोर्टों से शासन-प्रशासन, आम जनता और मीडिया जगत को चौंकाया। विभिन्न अवसरों पर गोपाल शर्मा के नीर-क्षीर विवेक से परिपूर्ण संपादकीयों और अग्रलेखों ने चिंतन-मनन को नए आयाम दिए। महानगर के प्रवेशांक का प्रथम वाक्य था, 'अंधियारा होने से पहले खबरों की रोशनी लेकर उपस्थित हो रहा है सांयकालीन दैनिक जयपुर महानगर टाइम्स।' 25 वर्ष की यात्रा में समाचार पत्र ने इसे चरितार्थ कर दिखाया है।

उदारवाद में लिपटी नई अर्थव्यवस्था ने भौतिकता की चकाचौंध में उपभोक्तावाद और बाजारवाद के तांडव

जयपुर महानगर टाइम्स

हामीलाई दया गर्नुस

मौतों का आंकड़ा 2,500 पार

हजार शव और मिले

» कुदरत का एक और कहर, भारी बारिश से थमा बचाव अभियान

» नेपाली राष्ट्रपति ने तंबू, सेनाध्यक्ष ने बाथरूम में गुजारी विनाश की रात

त्रिपाल में नेपाल
- मदद को आगे आया संयुक्त राष्ट्र संघ
- रविवार को 6.9 रिक्टर पर 20 झटके
- 66 लाख लोग प्रभावित
- भारत ने एनडीआरएफ की 6 टीमें, 13 विमान, 35 बसें राहत को भेजी

भारत की स्थिति
- 1,450 भारतीयों को सुरक्षित लाया गया
- रविवार को 3.5 रिक्टर स्केल की तीव्रता
- असम से लेकर हापुड़ तक फिर थर्राया
- रविवार को 6 राज्यों में फिर झटके
- देश में अब तक 70 मौतें, बिहार में 53
- मरने वालों के लिए 6 लाख का मुआवजा
- भरतपुर में दीवार गिरने से बच्ची की मौत
- बिहार-उत्तर प्रदेश में स्कूल बंद

को नया रूप दिया है, जिससे परिवार-समाज-देश-राष्ट्र और समूची दुनिया हतप्रभ है। ऐसे में, दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत के जन-जन का इससे प्रभावित होना लाजिमी है। इस गणतंत्र के चार स्तंभों में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ सम्मिलित खबरपालिका की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। ऊहापोह के विषम हालात में न्यायपालिका के साथ ही खबरपालिका से आमजन की आवाज सुनने और न्याय मिलने की उम्मीद कुछ हद तक बनी हुई है। बाजारवाद के युग में पत्रकारिता से मीडिया रूप में परिवर्तित इस धारा ने गलाकाट प्रतिस्पर्धा को नए तेवर दिए हैं। इस कारण नैतिकता और सिद्धांतनिष्ठा का दायरा संकुचित होता गया है। सनसनी फैलाने की कोशिशों और तथ्यहीन तथा एकतरफा खबरों ने मीडिया जगत की विश्वसनीयता पर गंभीर सवालिया निशान लगा दिए हैं। ऐसे माहौल में महानगर टाइम्स ने तथ्यपरक, निरपेक्ष और निर्भीक पत्रकारिता के आदर्शों का पालन करते हुए विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। समाज के जागरूक प्रहरी के रूप में महानगर टाइम्स ने पाठकों के दिल में जगह बनाते हुए अपने सिद्धांतों और अभिव्यक्त संकल्प से कभी समझौता नहीं किया। इसलिए महानगर टाइम्स की गौरव-गरिमा बरकरार है। इस साख को बनाए रखने को टीम तन-मन से समर्पित है। इसकी झलक समाचार पत्र में नियमित प्रकाशित विश्लेषणों, खबरों के प्रस्तुतीकरण और प्रभावी विशेषांकों में देखी जा सकती है।

महानगर टाइम्स द्वारा आयोजित सामाजिक सरोकार और राष्ट्रीयता से जुड़े अनूठे कार्यक्रमों ने 'सोने पर सुहागा' कहावत को साकार किया है। स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों, युगपुरुषों का सम्मान, सामाजिक समरसता के लिए पहल, राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए प्रखर आह्वान, समाजसेवियों और पत्रकारिता जगत के पुरोधाओं के अभिनंदन सहित सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़े आयोजनों में महानगर टाइम्स टीम की प्रतिबद्धता, समर्पण और कुशल प्रबंधन की मिसाल दी जा सकती है। ऐसे सारस्वत अनुष्ठानों की श्रृंखला ने जनता में श्रद्धा, समर्पण, सहयोग और राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करने का काम किया है।

हर अवसर की चुनौती को साहसपूर्वक स्वीकार करते हुए महानगर टाइम्स ने आम जनता की आवाज को प्रभावी तरीके से मुखर किया है। एक मायने में इस संस्थान ने पत्रकारिता की प्रशिक्षण शाला का दायित्व भी निभाया है। महानगर के साथ काम कर चुके कई पत्रकार सहयोगियों ने विभिन्न मीडिया संस्थानों को सुशोभित किया है। सुदीर्घ यात्रा तय करते हुए महानगर टाइम्स टीम पूरे जोश-खरोश और मनोयोग से अपने दायित्व निर्वहन में जुटी हुई है। गोपाल शर्मा के दोनों सुपुत्रों जिज्ञासु शर्मा और ऐश्वर्य शर्मा ने समाचार पत्र को नया कलेवर दिया है। नतीजतन, 17 वर्षों का सफर पूरा करके महानगर टाइम्स 25 सितम्बर, 2014 से प्रातःकालीन स्वरूप में पाठकों का चहेता बना हुआ है।

रजत जयंती से स्वर्ण जयंती और हीरक जयंती के पथ पर महानगर टाइम्स अग्रसर रहे, यश और सामर्थ्य में दिनों-दिन बढ़ोतरी हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ महानगर टाइम्स की पूरी टीम और संस्थापक गोपाल शर्मा का अभिनंदन!

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स (एनयूजेआई) इंडिया के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव हैं)

समय की शिला पर हस्ताक्षर

15 अक्टूबर, 2011

नरेन्द्र मोदी ही भविष्य का सशक्त चेहरा

सक्षम व्यक्तित्व के रूप में सिर्फ एक नाम उभरता है.. नरेन्द्र मोदी। मोदी में विश्व नेता बनने की सामर्थ्य है। वे इंदिरा गांधी के सशक्त नेतृत्व को और आगे बढ़ाने वाले साबित होंगे; वे वाजपेयी की तरह उदारवादी नहीं माने जाते, लेकिन उदारवादी वाजपेयी को भी विरोधी दलों ने कब स्वीकार किया! उम्मीद जगती है कि जिस तरह सरदार पटेल ने राज्यों को एकीकरण करवाकर सशक्त भारत की बुनियाद रखी, उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मोदी आतंकवाद मुक्त भारत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। पाकिस्तान तो मोदी जैसे नेतृत्व के रहते आंखें दिखाने की सोच भी नहीं सकता। मोदी भारत का सशक्त चेहरा हैं; उनका स्वागत होना चाहिए। ऐसे नेता की अनदेखी नहीं होनी चाहिए, जो देश के बड़े और सामर्थ्यशाली राज्यों में से एक प्रदेश में 10 सालों से मुख्यमंत्री बनने वाले अकेले राजनेता हों; जिन्हें नंबर-1 मुख्यमंत्री माना जाता हो; जो भ्रष्टाचार-चरित्रहीनता के आम आरोपों से अब तक सर्वथा दूर हों।

जयपुर **महानगर** टाइम्स

जयपुर, 15 अक्टूबर, 2011, शनिवार (कार्तिक कृष्ण तृतीया, २०६८)

आतंकवाद को कुचलने में सक्षम

भविष्य का सशक्त चेहरा

गोपाल शर्मा

'जिसमें जितना दम है वह उतनी ताकत लगा ले.. अभी तक ऐसी कोई गोली नहीं बनी जो हमारे विचारों को छलनी कर सके। किसी ने मां का दूध पिया है तो वह एकता यात्रा को रोककर दिखा दे.. हम संपूर्ण राष्ट्र के नागरिकों के आशीर्वाद का कवच लेकर श्रीनगर जा रहे हैं। 26 जनवरी को दुनिया की कोई ताकत हमें लालचौक पर तिरंगा फहराने से नहीं रोक सकती।'

आतंकवाद के सीने पर चढ़कर यह ललकारने की हिम्मत इस समय देश में सिर्फ नरेन्द्र मोदी में है। वह 23 जनवरी, 1992 की दोपहर थी ..और, जालंधर में मोदी एकता यात्रा की रैली में राष्ट्र की आवाज को बुलंद कर रहे थे। उससे ठीक डेढ़ घंटे पहले पास ही में फगवाड़ा-जालंधर राष्ट्रीय राजमार्ग पर उग्रवादियों ने एके 47 से अंधाधुंध गोलीबारी करके चार एकता यात्रियों की हत्या कर दी थी; 25 कार्यकर्ता गोलियां लगने से घायल हुए थे। ..मोदी उसी हमले के बाद बोल रहे थे। ..यह वह खौफनाक मंजर था जब कश्मीर लिबरेशन फ्रंट ने हमले के लिए 'ऑपरेशन मकबूल' का ऐलान किया था; और, इसके लिए विशेष स्क्वैड गठित किया था। अखिल भारतीय सिख छात्रसंघ (मंजीत गुट) और अकाली दल (मान) ने पंजाब होकर श्रीनगर नहीं पहुंचने की चुनौती दी थी। साथ ही, खालिस्तान कमांडो फोर्स का हमलावर दस्ता सीमा पार से भारत पहुंच चुका था। भारत सरकार ने लालचौक जाकर तिरंगा फहराने वाले ...

26 जनवरी, 1992 को लालचौक पर ये क्षण भी देखे, जब भारतीय सेना किसी भी तरह के हमले के प्रति चाक-चौबंद थी.. गोलियों की यदा-कदा आवाज आ रही थी.. लालचौक के आसपास की गलियों से जेहादी नारों की आवाज कानों तक पहुंच रही थी; उस माहौल में भी मोदी ने तिरंगा फहराए जाने के बाद भारतमाता की जय का नारा लगवाया था और बधाइयां ले-दे रहे थे। ...

13 सितंबर, 2001

जयपुर **महानगर टाइम्स**

स्थानीय समाचार, राष्ट्रीय दृष्टिकोण

NICE Wishes You Good Day Be a Nicean A Mission for future

सांध्यकालीन | वर्ष 4 अंक 248 | जयपुर, 13 सितम्बर, 2001 | पृष्ठ 12 | मूल्य 1 रुपया

भारत के सावधान रहने का समय

गोपाल शर्मा

...अत्यन्त दुखद होते हुए भी हमारा अमरीका के लिए आंसू बहाने का समय नहीं है। हजारों बेकसूर अमरीकियों के खून से भीगी अमरीका की जमीन क्या चाहती है और उसे उसका बदला कैसे चुकाना है यह भला नृशंस अमरीका से बेहतर कौन जान सकता है! लाखों लोगों के खून से रंगे हाथों का अंजाम यही हुआ करता है। अपनी औकात पर आए अमरीका के लिए इस समय न तो बिन लादेन को खाक में मिलाना कठिन है और न तालिबान-पाकिस्तान को धूल चटाना मुश्किल है। उसे वह सब करने दिया जाए क्योंकि उसमें हमारी कोई भूमिका नहीं है; लेकिन अमरीका पर हुए आतंकवादी हमले की समीक्षा भारत के घर-घर में होने लगे और हमारे देश का बुद्धिजीवी वर्ग इस घटनाक्रम की मीमांसा में जुट जाए यह सामयिक नहीं है। समय से पीछे चलने वाले लोग ही ऐसा किया करते हैं। हमारे लिए तो अमरीका की घटना आंखें खोलने वाली होनी चाहिए। ... मन यह सोचकर कांप रहा है कि जब अमरीका के सबसे सुरक्षित पेंटागन का अमरीका के ही साजो-सामान से सफाया किया जा सकता है और कुछ मिनटों में व्हाइट हाउस खाली करने को मजबूर करके उसके तलघर को बंकर में तब्दील करवाया जा सकता है तो हमारे देश की क्या सुरक्षा है जिसे पाकिस्तान और तालिबान को हमेशा निकट से भोगना है! अमरीका के ही विमानों को हमले का हथियार बनाकर महाशक्ति को इतनी गहरी शिकस्त देने की कल्पना अमरीका ने भले न की हो लेकिन दुनिया का शायद ही कोई देश होगा जिसके इतिहास में ऐसे आत्मबलिदानों का उल्लेख न हो जब लोगों ने अपनी आत्माहुति देकर शत्रुओं को गहरी मात देने का काम किया। इस वैज्ञानिक युग में जब एक भवन में 50 हजार लोग काम करेंगे और उस पर मार करने के लिए आसानी से विमान उपलब्ध हैं तथा उनके

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संसद पर हमले की आशंका

अमरीका की चिंता में आंसू बहाने की बजाए देश में जरूरत इस बात की है कि भारत की सुरक्षा पर चिंतन हो, उसकी तैयारी की जाए और हम अपनी कमजोरियों को दूर करके छिद्रविहीन व्यवस्था लागू करने की कोशिश करें। अब यह असंभव नहीं लगता कि यदि पाकिस्तान-तालिबान वगैरह ने चीन जैसे शक्तिशाली देश की शह पर भारत में किसी ऐसे षडयंत्र को अंजाम दे दिया तो हम न तो राष्ट्रपति भवन-प्रधानमंत्री निवास को बचाने की स्थिति में हैं और न सांसदों से भरी हमारी संसद को; अन्य स्थलों की तो बात ही क्या है! हालांकि गगनचुंबी इमारतों पर ऐसे हवाई हमले ज्यादा सटीक होते हैं, लेकिन भारत को नुकसान पहुंचाने के लिए तो उतने बड़े षडयंत्र की भी जरूरत नहीं है। भारत को भगवान भरोसे छोड़ने से काम चलने वाला नहीं है; यह राष्ट्रवाद के जागरण का समय है।

30 जून, 2001

मनमोहन के प्रधानमंत्री बनने का इशारा

अमेरिका में पत्रकारों से बातचीत करते हुए सोनिया गांधी ने कहा कि उनकी पार्टी में प्रधानमंत्री पद के कई दावेदार हैं और कुछ तो उनके साथ आए भी हैं। निश्चित तौर पर उनका इशारा मनमोहन सिंह की ओर होगा, लेकिन 'कुछ' शब्द से नटवर सिंह भी फूले नहीं समा रहे होंगे जो उनके साथ गए हैं। महत्वपूर्ण यह है कि सोनिया गांधी को लग गया है कि कांग्रेस में प्रधानमंत्री पद के लिए एकमेव दावेदार के रूप में यदि वे खड़ी रहती हैं तो इससे उन्हें अधिक जनसमर्थन हासिल होने वाला नहीं है। यह स्वीकारोक्ति यदि उन्होंने मन से की होगी तो कांग्रेस एक बार फिर वाजपेयी सरकार से टक्कर लेने की स्थिति में आ सकती है।

विचार नवनीत

स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है। - विवेकानन्द

धन्यवाद सोनिया !

बयान देने में सावधानी भरी पहल

कांग्रेस अध्यक्ष और लोकसभा में प्रतिपक्ष की नेता सोनिया गांधी के प्रति उनके विरोधियों को दो ही तरह की शिकायतें रही हैं। एक तो, वे यह नहीं जानतीं कि किस समय क्या बोला जाए और दूसरा इतालवी मूल की होने के बावजूद भारत की प्रधानमंत्री बनने का स्वप्न पाले हुए हैं। इस संदर्भ में अमरीका में पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने जो कहा है उससे उनकी छवि में न केवल निखार आया है बल्कि वे एक जिम्मेदार, संतुलित और गंभीर राजनेता के रूप में सामने आई हैं। वाशिंगटन से पत्रकारों ने उनसे पूछा था कि वाजपेयी-परवेज मुशर्रफ शिखर वार्ता को सफल बनाने के लिए वे क्या सुझाव देना चाहेंगी; सोनिया गांधी ने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया कि उनके देश में ...

समय की शिला पर हस्ताक्षर

सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री बनने में संशय

18 मई, 2004

सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनते देखकर जहां आम कांग्रेसी कार्यकर्ता उल्लासित और हर्ष विभोर है; वहीं, सोनिया गांधी के प्राणों से प्रिय बेटे-बेटी राहुल और प्रियंका गहरे उदास हैं। वे सोनिया गांधी के सुखद भविष्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं और हृदय से नहीं चाहते कि उनकी मां प्रधानमंत्री बनें। राहुल और प्रियंका ने अपने मनोभावों से कांग्रेस के एकाधिक वरिष्ठ नेताओं को अवगत करवाया है और यह आग्रह किया है कि किसी और को प्रधानमंत्री बना दिया जाए... उनकी मां पर दबाव नहीं डाला जाए। राहुल-प्रियंका इस विषय पर इतने अधिक उद्वेलित हैं कि उन्होंने कांग्रेस नेताओं को अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किए, *'आप क्यों मम्मी को मरवा देना चाहते हैं!'* कांग्रेस नेताओं के पास इस बात का कोई जवाब नहीं है। इतना ही नहीं, सोनिया गांधी के इटली वाले परिजन भी आशंकित है। वे मानते हैं कि सोनिया गांधी जीवट वाली बहादुर हैं, लेकिन प्रधानमंत्री बनने के बाद उनके जीवन को खतरा हो सकता है।

जयपुर
महानगर टाइम्स
स्थानीय समाचार, राष्ट्रीय दृष्टिकोण
राहुल-प्रियंका दुखी, सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में नहीं

28 फरवरी, 2002

नपुंसक नेतृत्व, दिशाहीन हिन्दू!

गोपाल शर्मा

आधी रात के बाद मुम्बई में सांताक्रूज की जिस गली में मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं वह बिल्कुल शांत चुपचाप पड़ी है; लेकिन कब कहां क्या हो जाए कहना कठिन है। ठीक वैसे ही जैसे कल गोधरा की घटना से कुछ घंटे पहले मैं उस स्टेशन से गुजरा तो वहां शांति का माहौल था। लेकिन कुछ ही घंटों में सब अस्त-व्यस्त हो गया। सूरत-भरूच-बड़ौदा- आणंद वगैरह अन्दर ही अन्दर सुलग रहे हैं और ऐसी ही खबरें अहमदाबाद- साबरकांठा से हैं। रातभर हिंसक घटनाएं हुई हैं। सहनशील हिन्दुओं के मन में भी दावानल धधक रहा है, गुस्सा भड़का हुआ है लेकिन उन्होंने अभी सब्र का बांध नहीं तोड़ा है। आखिर कब तक ये होंठ सिले रहेंगे... जुबान बन्द रहेगी और आंखें अश्रुपात करती हुई मौत का ताण्डव देखती रहेंगी। क्या श्रद्धांजलि है उन दस बच्चों और पन्द्रह महिलाओं सहित साठ निरपराधों की ... क्या गुनाह था उनका? क्योंकि वे हिन्दू थे... उनमें कारसेवक थे ... क्योंकि उन्हें देश की अखण्डता-एकता से प्यार है... क्योंकि वे देशभक्त हैं... क्योंकि वे स्वभाव से उदारवादी हैं... क्योंकि उन्हें बदला लेना और मरना-मारना नहीं सिखाया गया है! इसीलिए उन्हें समाजकंटकों की भीड़ ने बोगी में बन्द करके पेट्रोल छिड़ककर जिन्दा जला दिया!

बताए वाजपेयी सरकार, देश के ठेकेदार ये कांग्रेसी, कम्युनिस्ट और कमजोर- बुजदिल भाजपा वाले! कहां जाएं इस देश के हिन्दू... किस कोने में जाकर छिप जाएं या किस बंगाल की खाड़ी में जाकर आत्महत्या कर लें? हमारे लाखों कश्मीरी भाई अपने ही देश में विस्थापित होकर गुलामी की जिन्दगी जीने को (शेष पृष्ठ 3 पर)

गोधरा की प्रतिक्रिया की चेतावनी

हिंदुओं के लिए राम का नाम लेना और राममंदिर बनाने की मांग करना कोई गुनाह नहीं है। कारसेवक यही कर रहे हैं और ऐसा करने पर उन्हें जिंदा जलाया जाता है और सरकार किंकर्तव्यविमूढ़ होकर टुकुर-टुकुर ताक रही है, तो यह समझ लिया जाए कि ऐसी सरकारों पर कोई आंसू बहाने वाला नहीं होगा। ये नपुंसक सरकारें और निर्वीर्य नेतृत्व वर्ग मुस्लिम वोट बैंक के लालच में देश से कृतघ्नता नहीं करें। वे राजधर्म का पालन करें और हमलावर समाजकंटकों को करारा जवाब दें; उन्हें जेल के सींखचों में डालें तथा ऐसी कड़ी कार्रवाई करें कि इनकी रूह कांप जाए। यदि इसमें कोताही बरती तो सारा देश कहीं सुलगता नहीं दिखाई देने लग जाए!

गडकरी के भाजपा अध्यक्ष होने का पूर्वानुमान

26 सितंबर, 2009

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर महाराष्ट्र के नेता नितिन गडकरी को लाने का विचार चल रहा है। राजनाथ सिंह का कार्यकाल आगामी नवम्बर माह में पूरा हो रहा है। हालांकि यह बहुत कुछ अगले महीने होने वाले विधानसभा चुनाव परिणाम पर भी निर्भर करेगा, लेकिन फिलहाल पार्टी के बारे में फैसला करने वाले शीर्ष नेतृत्व की निगाहें गडकरी पर टिकी हुई हैं। 53 वर्षीय गडकरी मूलतः नागपुर के रहने वाले हैं और वर्तमान में महाराष्ट्र भाजपा के अध्यक्ष हैं। वे ऐसे राजनेता के रूप में जाने जाते हैं, जो लगातार पिछड़ों और गरीबों के उत्थान में जुटे हुए हैं। वे महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष रह चुके हैं। गडकरी विकास की अवधारणा रखने वाले उन राजनेताओं में भी शुमार हैं, जिनकी उद्योगों और आर्थिक विकास में गहरी रुचि है।

जयपुर
महानगर टाइम्स
गडकरी होंगे भाजपा अध्यक्ष!

गंजापन नो टेंशन
चले आइये सेटिसफेक्शन
मात्र रु. 1999/-
2 घंटे पहले
2 घंटे बाद
बिना सर्जरी के अमेरिकन तकनीकी द्वारा
सेटिसफेक्शन हेयर विविंग पॉइंट
शॉप. नं. 137, स्पेस सिनेमा सिटी प्लाजा
Ist Floor बनीपार्क, जयपुर
Mo. 9214310465

जयपुर

महानगर टाइम्स

लोकतंत्र को समर्पित समाचार पत्र

www.mahanagartimes.net वर्ष 17 अंक 121 जयपुर, 15 अप्रेल, 2014, मंगलवार (चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, २०७१) पृष्ठ 8 मूल्य 2 रुपए

हनुमान जयंती की शुभकामनाएं
17 अप्रेल 2014 को मतदान अवश्य करें
वोट फॉर इण्डिया
राजस्थान मिशन 25
मुकेश पारीक
प्रदेश संयोजक
नटवर लाल गर्ग 9351591496
हितेश अग्रवाल 9414332255

जम्मू से पोर्ट ब्लेयर, बाड़मेर से इम्फाल ..बदलाव की बयार

नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनें या नहीं.. (फिर खुद को टोकते हुए) नहीं–नहीं, प्रधानमंत्री तो खैर वे अब बन ही गए हैं.. लेकिन यह जरूर है कि एक–एक घर और एक–एक आदमी तक मोदीजी का नाम पहुंच गया है। **–सुरेन्द्र महतो,** बिहारी श्रमिक

विश्व के भारतवंशियों ने लोकसभा–2014 को स्वाभिमान से जोड़ा

मोदी ही पीएम

3 महीनों में 30 हजार किलोमीटर की यात्रा का निष्कर्ष

इम्फाल
हमारे मनमोहन सिंह और हमारी सोनिया गांधी को बहुत देख लिया। इस बार मोदी को देखना चाहते हैं।
–नन्हन
(मेईती टैक्सी ड्राइवर)

अहमदाबाद
प्रवासी भारतीयों के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जरूरी है कि मोदी भारत के प्रधानमंत्री बनें।
–अंजलि बेन
(प्रवासी भारतीयों में 40 वर्षों से सक्रिय)

हांगकांग
हांगकांग के सिम सा सुई में एक सड़क के बारे में टिप्पणी, 'मोडी रोड.. नॉट नरेन्द्र मोदी रोड'।
–सिन जुआन
(एक स्थानीय छात्र)

न्यूयॉर्क
नरेन्द्र मोदी को देखना बाकी है लेकिन शायद वे अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री होंगे।
–भंवरलाल सरावगी
(प्रवासी राजस्थानी मूल के व्यवसायी)

गोपाल शर्मा

3 महीनों के दौरान कई दौर में 30 हजार किलोमीटर की यात्रा.. जम्मू से पोर्ट ब्लेयर, बाड़मेर से इम्फाल.. गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक जैसे विविध प्रभाव वाले राज्यों के दौरे.. नेपाल–श्रीलंका से थाईलैंड–हांगकांग–मकाऊ यानी शेनझेन की सीमा तक अनेक भारतवंशियों से मुलाकातें.. अमेरिका–इंग्लैंड–कनाडा में रह रहे प्रवासी भारतीयों से फोन पर बातें.. जैसे भारतीयों ने चुनाव परिणाम से पहले ही मान लिया है कि अगले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी होंगे। प्रवासी भारतीयों में 'पावरफुल पीएम' की ललक पैदा हो रही है ताकि वे दुनिया के सामने भारत के नेता का नाम गौरव के साथ ले सकें; वहीं, भारत का बड़ा वर्ग बदलाव की बयार की रौ में बह जाने को मन बनाए बैठा है। चाहे कोई किसी भी पार्टी का समर्थक क्यों न हो लेकिन देश की सच्चाई है, 'घर–घर मोदी, हर घर मोदी'.. अगर कोई भारतीय जनता पार्टी या समर्थक पार्टी को वोट देने नहीं जा रहा है तो भी उसके घर में सबसे अधिक चर्चा नरेन्द्र मोदी की हो रही है। इम्फाल के 40 वर्षीय मेईती टैक्सी ड्राइवर नन्हन अपने मनमोहन सिंह–सोनिया गांधी को छोड़कर नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं.. जम्मू पिछली गलती को सुधारने को तत्पर है.. हांगकांग के प्रसिद्ध 'मोडी रोड' के लिए वहां का स्थानीय सिन जुआन कहता है, 'मोडी रोड.. नॉट नरेन्द्र मोदी रोड'। ..बैंकाक में जयपुर के प्रवासी मोहित पांडे कहते हैं, 'इस बार तो मोदीजी आएंगे' ..अमेरिका में 40 वर्षों से भारतीयों को जोड़ने में लगी अंजलि बेन भारत के चुनाव के संदर्भ में मोदी की चर्चा करते हुए भावविह्वल हो जाती हैं.. वे कहती हैं कि प्रवासी भारतीयों के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जरूरी है कि मोदी भारत के प्रधानमंत्री बनें.. बैंकाक में अंतरराष्ट्रीय उद्योगपति सम्मेलन में भारत के राजदूत की उपस्थिति में मंच से मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पुरजोर कोशिश किए जाने का आह्वान होता है.. श्रीलंका के कैंडी–कोलंबो में मोदी की उतनी ही चर्चा है जितनी नेपाल के काठमांडू–विराटनगर और बीरगंज में.. मकाऊ की सबसे बड़ी होटल वेनेशिया में आणंद (गुजरात) की प्रबंधक सुरभि मोदी के नाम से रोमांचित हैं तो वहां की प्रसिद्ध रेस्टोरेंट चेन की प्रमुख अरुणा झा के खचाखच भरे रहने वाले रेस्टोरेंटों में नरेन्द्र मोदी के बैनर छाए हुए हैं.. यहां तक कि गणेशजी की प्रतिमा को भाजपा के कमलधारी दुरंगे झंडे का दुपट्टा ओढ़ाया हुआ है। विदेशों में नरेन्द्र मोदी के बैनर लगे हुए हैं जिनमें नरेन्द्र मोदी चाय का कप थामे हुए दिखते हैं। भारत में खासकर उत्तर भारत, जिसकी जनता लहर ने कांग्रेस को 1977 में सत्ताच्युत किया था, की हालत यह है कि जयपुर–लखनऊ–भोपाल–पटना–दिल्ली.. चारों तरफ भाजपा नंबर वन है और नरेन्द्र मोदी भाजपा का प्रतीक।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

उप-राष्ट्रपति, भारत
VICE-PRESIDENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि जयपुर के लोकप्रिय समाचारपत्र सांध्यकालीन दैनिक "महानगर टाइम्स" के दसवें स्थापना दिवस के अवसर पर एक विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस समाचारपत्र के संपादक श्री गोपाल शर्मा से मेरे निकट के आत्मीय संबंध हैं। उनके राष्ट्रवादी विचारों और स्वस्थ पत्रकारिता के सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने मुझे सदैव प्रभावित किया है। श्री शर्मा एक निर्भीक और आशावादी पत्रकार हैं जिन्होंने स्वयं अपनी सामर्थ्य से इस समाचारपत्र का न केवल प्रकाशन प्रारंभ किया, बल्कि उसे लोकप्रियता और सफलता की नई ऊँचाइयों पर ले जाने में सफलता प्राप्त की है।

मैं स्थापना दिवस के अवसर पर "महानगर टाइम्स" के संपादक श्री गोपाल शर्मा और उनके सहयोगी पत्रकार बंधुओं तथा सभी पाठकों को बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए इसकी निरंतर प्रगति की मंगल कामना करता हूँ।

(भैरोंसिंह शेखावत)

नई दिल्ली
1 फरवरी, 2007

हरिवंश
Harivansh

उप सभापति, राज्य सभा
Deputy Chairman, Rajya Sabha

32, संसद भवन, नई दिल्ली
32, Parliament House, New Delhi
दूरभाष/Tel.: 23017371, 23034689
फैक्स/Fax : 23012559

दिनांक – 16/11/2022

भाई श्री गोपाल शर्मा जी,

महानगर टाइम्स के 25 वर्ष पूरे होने पर आपको, आपकी टीम के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं. 25 नवंबर 2022 को आयोजित होनेवाले रजत जयंती समारोह का आमंत्रण आपने भेजा. मुझे इस आयोजन में शामिल होना बहुत अच्छा लगता. निज उद्यम, संकल्प, सरोकार से खड़ा हुए एक अखबार के 25 वर्षों के सफरनामा पर होनेवाले आयोजन का गवाह बन खुशी होती. पर, पहले से तय कार्यक्रम की वजह से आना संभव नहीं हो पा रहा है. इसके लिए खेद है.

90 के दशक को भारतीय मीडिया के लिए एक लैंडमार्क दौर माना जाता है. उदारीकरण, भूमंडलीकरण और सूचना-तकनीक क्रांति का दौर शुरू हुआ.इसका व्यापक असर मीडिया जगत पर पड़ा. पत्रकारिता, जो स्वतंत्र और विराट अस्तित्ववाला शब्द था, वह मीडिया जैसे शब्द के समंदर में विलीन होने लगा. मीडिया को उद्योग का दर्जा मिला. नया दौर शुरू हुआ. बड़ी पूंजी के साथ अनेक बड़े घरानों के अखबारों का विस्तार हुआ. सूचना क्रांति के दौर ने नये किस्म की पत्रकारिता का विकास किया. टीवी का जमाना आया. लगा कि अब बस, पत्रकारिता यहीं पर सिमटेगी. बाद में सोशल मीडिया और न्यू मीडिया का जमाना आया. दशकों से जमे-जमाये पुराने, प्रतिष्ठित अखबार, पत्रकारिता संस्थान इससे प्रभावित हुए. ऐसे दौर में, एक नये संस्थान की शुरुआत करना और जयपुर जैसे एक शहर से निकलकर अपनी अलग पहचान बनाना, छाप छोड़ना, निज संकल्प और प्रतिबद्धता से ही संभव था. यह आपने किया, तभी यह संस्थान रजत जयंती वर्ष में पहुंचकर समारोह का आयोजन कर रहा है.

पत्रकारिता के साथ ही आप निरंतर लेखन में लगे रहे, सामाजिक कामों में लगे रहे, अनेक पुस्तकों की रचना की, यह सब प्रेरक है.

कामना है कि आपकी सक्रियता, सृजन, सरोकार के दायरे का निरंतर विस्तार हो. महानगर टाइम्स समय के प्रवाह के साथ और बढ़े. एक बार फिर से रजत जयंती की शुभकामनाएं.

हरिवंश

वसुन्धरा राजे
मुख्यमंत्री राजस्थान

आशा पत्र क्रमांक मुम./जसप्र/2008
जयपुर, दिनांक 20 MAY 2008

माननीय गोपालजी

जयपुर में हुए बम धमाकों ने हम सबकी अंतर्रात्मा को झकझोर दिया है। राजस्थान जैसे शांतिप्रिय प्रदेश में आतंकियों ने विकास की धारा को अवरुद्ध करने की जो साजिश रची थी, उसे यहां की जनता ने पूरी तरह नकार दिया है।

जनता में ऐसा करने का साहस और आत्मविश्वास जगाने में आपने और हमारे अपने अखबार महानगर टाइम्स ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी प्रोफेशनल जिम्मेदारियों के निर्वहन में भी आपने मानवीय संवेदना को सर्वोपरि रखा है। सकारात्मक सोच के साथ की गई जिम्मेदारीपूर्ण पत्रकारिता ने साम्प्रदायिकता के दावानल से राजस्थान को बचाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इससे भय, आतंक और विद्वेष फैलाने के नापाक इरादों में आतंकी कामयाब नहीं हो सके।

मैं प्रदेश की जनता और राजस्थान सरकार की ओर से आपका हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं। साथ ही, उम्मीद करती हूं कि सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ आप हमेशा राज्य के विकास में इसी तरह अपना योगदान देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित!

सद्भावी,

(वसुन्धरा राजे)

श्री गोपाल शर्मा,
प्रधान सम्पादक, 'महानगर टाइम्स'
जयपुर

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम./सन्देश/ओएसडीएफ/2021
जयपुर, 31 अक्टूबर, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जयपुर से प्रकाशित दैनिक महानगर टाइम्स द्वारा प्रकाशन के 25वें वर्ष में प्रवेश पर 1 नवम्बर, 2021 को विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

एक दैनिक समाचार पत्र का ढाई दशक से प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। यह समाचार पत्र के प्रति पाठकीय साख का परिचायक है। यह शुभ है कि समाचार पत्र ने जनहित को सदैव महत्व दिया है।

आशा है अपने रजत जयंती वर्ष की यात्रा के दौरान पत्रकारिता के स्वस्थ मूल्यों का अनुसरण करते हुए यह समाचार पत्र पूरी प्रतिबद्धता से सामाजिक सरोकारों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए आगे बढ़ेगा।

मैं महानगर टाइम्स के सम्पादक मंडल, पाठकों और सहयोगियों को 25वें वर्ष में प्रवेश पर बधाई देते हुए विशेषांक के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

श्री गोपाल शर्मा, संपादक
महानगर टाइम्स,
प्लॉट नं. 2, सहकार मार्ग, ज्योति नगर,
लाल कोठी, जयपुर–302015
(राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी महानगर मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशक गोपाल शर्मा द्वारा
2, सहकार मार्ग, ज्योतिनगर, लालकोठी, जयपुर-15 से प्रकाशित एवं
महानगर मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड, जी-848, फेज-3, रीको सीतापुरा, जयपुर से मुद्रित।